नवोदय

੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पी.एस.बी

Navodaya

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की तिमाही गृह पत्रिका | मार्च 2024

Punjab & Sind Bank Quarterly House Journal | March 2024

PSB UnIC

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 1 30-05-2024 12:45:16

Congratulations to Team PSB

Our Bank secured the 1st Position for Top improvement in EASE 5.0 reforms. Also win the 1st Runner-up award under the Collaborative and development focused banking theme.

Dr. Charan Singh (Non-Executive Chairman), Shri Swarup Kumar Saha (MD & CEO), Shri Gopal Krishan (General Manager), Shri Rajendra Kurmar Raigar (General Manager), Ms. Neerja (Chief Manager) were present there to receive the award

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 2 30-05-2024 12:45:17

नवोदय Navodaya

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की तिमाही गृह पत्रिका | मार्च 2024

Punjab & Sind Bank Quarterly House Journal | March 2024

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

प्रधान कार्यालय, बैंक हाउस, 21 राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली - 110008

Head Office, Bank House, 21, Rajendra Place, New Delhi - 110008

ई.मेल/E-mail: editor.navodaya@psb.co.in

मुख्य संरक्षक / Chief Custodian

श्री स्वरूप कुमार साहा

Shri Swarup Kumar Saha

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी/MD & CEO

संरक्षक / Custodian

डॉ. रामजस यादव

Dr. Ram Jass Yadav

कार्यकारी निदेशक / Executive Director

श्री रवि मेहरा

Shri Ravi Mehra

कार्यकारी निदेशक / Executive Director

मुख्य संपादक / Chief Editor

श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर

Shri Gajraj Devi Singh Thakur

महाप्रबंधक / General Manager

संपादक मंडल / Editorial Board

श्री राजेश सी पांडे

Shri Rajesh C Pandey

महाप्रबंधक / General Manager

श्री निखिल शर्मा

Shri Nikhil Sharma

मुख्य प्रबंधक (संपादक) / Chief Manager (Editor)

श्रीमती भारती

Smt. Bharati

प्रबंधक (सह–संपादक) / Manager Co-Editor

पंजाब एण्ड सिंध बैंक गृह पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। सामग्री की मोलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : इनफिनिटी एडवर्टाइजिंग सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड, एफबीडी वन कॉर्पोरेट पार्क, 10वीं मंजिल, नई दिल्ली फरीदाबाद बॉर्डर, एनएच–1, फरीदाबाद–121003

विषय सूची/INDEX

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	संपादक मंडल/विषय–सूची	1
2	Message from Executive Director	2
3	संपादकीय	3
4	शुभकामनाएं एवं सुझाव	4
5	Education a blessing	5 - 7
6	Newly promoted Executive	8
7	Branch Incharges Meeting ZO Guwahati	9
8	All about nomination in Bank	10 -11
9	Opening of new branch & customer meet in Barma Camp Dimapur(Nagaland)	12
10	Highlights of Bank performance of March 2024	13
11	Zone performance as on 31.03.2024	14 - 15
12	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)	16 - 17
13	आंचलिक कार्यालय पटियाला में पीएसबी आओ खेलें का आयोजन	18
14	वटवा (अहमदाबाद) शाखा का शुभारंभ	19
15	विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में भारत के मजबूत कदम	20 - 21
16	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन	22
17	गणतंत्र दिवस का आयोजन	23
18	Artificial Intelligence: Endless Opportunities and Growth in Agriculture	24 - 26
19	प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी महोदय का शाखा दौरा/पीएम सूरज पोर्टल का उद्घाटन	27
20	अंचल कार्यालयों में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन	28
21	शाखा के नवीन परिसर/नवीन शाखा का उद्घाटन	29
22	Important Circulars	30 - 31
23	Cash Management- Exchange Rules & Impounding of Counterfeit Currency	32- 34
24	बैंक की शाखाओं के नवीन परिसर का शुभारंभ	35
25	Welfare and Freebies - An Emerging Concept	36 - 37
26	Branch Incharges Meeting ZO Faridkot	38
27	समय प्रबंधन का महत्व	39 - 40
28	भारतीय अर्थव्यवस्था: भूत, वर्तमान और भविष्य	41 - 44

आजादी का अमृत महोत्सव

੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Government of India Undertaking)

G20 भारत 2023 INDIA

डॉ. रामजस यादव
कार्यकारी निदेशक

Dr. Ram Jass Yadav
Executive Director

30th April 2024

Dear *PSBian's,*

As I reflect on my long journey of 40 years in Banking Industry with Bank of Baroda as Career Bank and our P&SB over the past few years, I am filled with immense pride and gratitude for each and every one at PSB Parivar and Barodians. Today, as I prepare to bid farewell and embark on a new chapter, I am obliged to express my heartfelt appreciation for your unwavering dedication, relentless efforts, and steadfast support.

Since joining the Bank on October 21, 2021, we have collectively achieved remarkable milestones. Together, we have propelled the Bank to new heights, reaching a significant **Rs 2 lakh crores** in business. This accomplishment is a testament to our collective strength, resilience, and commitment to excellence.

Moreover, our strides in embracing technology have been exemplary to become one of the **Tech efficient** Bank in the industry. The successful upgrade to "**Finacle 10.x**" and the launch of the "***PSB UnIC***" underscore our commitment to innovation and customer-centricity. These initiatives have not only enhanced our operational efficiency but have also elevated the banking experience for our valued customers.

Let us draw the inspiration from the timeless wisdom of Shri Guru Nanek Dev Ji, who imparted three principles "***नाम जपो, किरत करो, वंड छको***" in our strides toward transforming into a "**Happy Bank**" –where every staff member isn't merely content, but genuinely fulfilled, healthy, and motivated. Our workforce, epitomized by its youthful energy and dynamism, is the cornerstone of our institution. It is crucial that we cultivate this sense of solidarity, positivity, and inclusivity, guaranteeing that each stakeholders including our customers, feels appreciated, respected, and empowered.

As I bid adieu, I urge each one of you to embrace challenges with vigor and zeal. Let us not rest on our laurels but instead, strive for extraordinary performance, pushing the boundaries of what is possible. I truly believe that you will continue to uphold the legacy of excellence at the Bank, and steer it towards even greater success.

Thank you once again for accepting me as PSBian with your unparalleled dedication and commitment. It has been an honour and privilege to work with such an exceptional team. As I embark on this new chapter, I carry with me fond memories and cherished experiences that will forever remain etched in my heart.

Wishing you all continued success, prosperity, and fulfilment.

हृदय से सभी साथियों को
कोटि-कोटि नमन

With warmest regards,

(Dr Ram Jass Yadav) 30/04/24

संपादकीय

प्रिय साथियो,

नये वित्तीय वर्ष के साथ ही बैंक ने पदोन्नति प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूर्ण कर ली है। मैं पदोन्नति प्राप्त समस्त स्टाफ सदस्यों को शुभकामनाएं देता हूं एवं उनके सफल भविष्य की कामना करता हूं। साथियों हमारे बैंक ने अभी–अभी तकनीकी बाध्यताओं को दूर करते हुए तथा बाजार में अपनी नवीन पहचान बनाते हुए फिनेकल–10 की दुनिया में कदम रखा है। मैं मानता हूं कि यह कदम हम सभी के लिए बिल्कुल नया है और हो सकता है कि इसे पूर्णतः अपनाने और सफलतापूर्वक परिचालित करने में कुछ बाधाओं का सामना भी करना पड़े। लेकिन याद रहे, कि प्रतिस्पर्धा में भाग लेकर जीतने के लिए मेहनत तो करनी ही पड़ती है। मुझे अटूट विश्वास है कि हम ऐसा करने में सफल होंगे और नवाचार अपनाते हुए बैंक को बुलंदियों तक पहुंचाएंगे। मुझे आशा है की हम सभी के अथक प्रयासों एवं कड़ी मेहनत के परिणाम सकारात्मक एवं बेहतर ही होंगे।

ना हार मानो, ना रुको कभी,
आगे बढ़ो, खुद को मजबूत करो।
संघर्ष नहीं, जीत है तुम्हारी,
अपनी क्षमताओं की खुद से पहचान करो।

गृह पत्रिका नवोदय अपने विचारों और अनुभवों को दूसरों तक जोड़ने का एक साझा प्रयास है। इसी उद्देश्य से पत्रिका में अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं रोचक लेख एवं कार्टून को भी समाहित किया जाता है। इसके अतिरिक्त गृह पत्रिका नवोदय के इस अंक में मुख्य रूप से बैंक में आयोजित विभिन्न गतिविधियों, बैंक के विभिन्न उत्पादों, नीतियों, महत्वपूर्ण परिपत्रों सहित Education a Blessings, Practicing Gratitude in Life, Welfare and freebies & an Emerging Concept, समय प्रबंधन का महत्व, भारतीय अर्थव्यवस्थाः भूत, वर्तमान और भविष्य आदि लेख भी समाहित किए गए हैं, जो हमारी जानकारी को पोषित करते हैं। इसलिए आप सभी अपने विचारों को पत्रिका के माध्यम से साझा करते रहें।

मुझे विश्वास है कि आप इसे उपयोगी और सूचनाप्रद पाएंगे। बैंकिंग के विविध पहुलओं को समेटे यह पत्रिका आपको कैसी लगी, इसके अनवरत सुधार की दिशा में आपकी प्रतिक्रिया एवं सुझावों का हमें सदैव इंतजार रहेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

(गजराज देवी सिंह ठाकुर)
महाप्रबंधक एवं मुख्य संपादक

शुभकामनाएं एवं सुझाव/Letter to the Editor

नवोदय पत्रिका के सफल संपादन हेतु हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। गृह पत्रिका के इस अंक में बैंक की विभिन्न योजनाओं, महत्वपूर्ण परिपत्रों एवं गतिविधियों को बखूबी से दर्शाया गया है। पत्रिका में शामिल बैंकिंग तथा वित्त संबंधी आलेखों की प्रस्तुति बेहतर ढंग से की गई है। विशेषकर पत्रिका में प्रकाशित अरविंद कुमार के आलेख "कारोबार में मूल्य और आचार" में कारोबार में उच्च मूल्यों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। आंचल खरबंदा का आलेख "Live in Peace...and not in pieces" मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा आलेख है। इसके अलावा विकास चौहान और विवेक रंजन द्वारा रचित आलेख क्रमशः "भ्रष्टाचार को मना करें, राष्ट्र के लिए समर्पित रहें" एवं "Risk – Dangers of Using Artificial Intelligence" आलेख भी काफी प्रासंगिक और सूचनाप्रद है। पत्रिका में प्रकाशित अन्य आलेख भी रोचक एवं पठनीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पूरी संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं।

अजय के खोसला
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ बड़ौदा

"नवोदय" के नवीनतम अंक की प्राप्ति हुई, जिसके लिए आप सभी लोगों का हार्दिक धन्यवाद। सभी लेखकों ने जिस तरह जटिल से जटिल विषय को काफी सहज एवं सरलता पूर्वक सबके समक्ष प्रस्तुत किया है वह 'गागर में सागर' भरने के समान है। नवोदय की विशिष्ट शैली, विषयों के प्रति पृथक दृष्टिकोण अत्यंत महत्व के साथ उभर कर आया है। "हमारी विचार शक्ति ही हमें बनाती या बिगाड़ती है। चेतना जड़ की अपेक्षा सूक्ष्म है, इसलिए अधिक शक्तिमान है। यदि हमने हर स्थिति में मुस्कराने की आदत बना ली, नकारात्मकता को नकार कर अच्छाइयाँ तलाशने का स्वभाव बना लिया, तो सचमुच हमें कोई अपने पथ से पृथक नहीं कर सकता।'' अरूणोदय की प्रथम किरणों का ओजस्वी प्रकाश हमेशा आपके जीवन में नई ऊर्जा, नई चेतना, सकारत्मक सोच, आरोग्य काया, यशस्वी जीवन, नई उपलब्धियां हासिल कराने वाली हो ऐसी कामना करता हूँ।

राजेश मल्होत्रा
आंचलिक प्रबंधक, भोपाल

मुझे बैंक की द्विभाषिक तिमाही गृह पत्रिका "नवोदय" का दिसंबर 2023 अंक प्राप्त हुआ, जिसके लिए आपका कोटि–कोटि धन्यवाद! पत्रिका में प्रकाशित सामग्री हमेशा की तरह बहुत ही आकर्षक एवं प्रेरणादायक लगी। पत्रिका में प्रकाशित हिंदी विषयों जैसे भ्रष्टाचार को मना करें–राष्ट्र के लिए समर्पित रहें, नागरिक के जीवन में सतर्कता की भूमिका, व्यवसाय में लाभप्रदता और मूल्य प्रणाली, अविस्मरणीय घटना आदि रचनाओं ने हृदय में विशेष स्थान बनाया। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी विषयों पर प्रकाशित रचनाएँ जैसे Leave in Peace...and not in Pieces, Risk & Dangers of Using Artificial Intelligence, V-CIP (Video Customer Identification Process) and its Advantage in Banks आदि भी बहुत ही सुंदर लगीं। इस पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्रों के माध्यम से बैंक के प्रधान कार्यालय एवं विभिन्न अंचल कार्यालयों में हो रही अन्य गतिविधियों के बारे में भी जानकारी मिली। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं इस पत्रिका के माध्यम से बैंक को प्राप्त विभिन्न उपलब्धियों हेतु पत्रिका के संपादक मंडल/प्रकाशक को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

कुलदीप सिंह
आंचलिक प्रबंधक, अमृतसर

Dr. Charanjeet singh

EDUCATION - A BLESSING

It is common wisdom that when we light a lamp, it banishes darkness. The example is extended to literacy and learning to say that world wide it has been a common experience of people that education of people makes them knowledgeable. It helps the poor and socially marginalized sections of the society to improve their income and earning capacity. In the metaphor, the darkness denotes illiteracy, ignorance and poverty; the lamp being the literacy, education and knowledge of the people.

The message is well understood by us individually, and collectively as society, that illiteracy among the people anywhere is a cause of chronic poverty, which most often prevails for centuries and generations. It is also well known through internationally recognized research and studies that most debilitating ills of large swaths of humanity flow form illiteracy-linked poverty. It is a curse for those mired in it and also for the society and the nations at large.

Literacy and education have been found to be one sure cure to lift masses of people out of poverty. The social scientists prefer to use the term literacy as it can be measured by the number of citizens receiving education at schools, colleges and universities. Education on the other hand is wider term and embraces qualities that a student imbibes at these institutions along with the literary lessons and studies in the classrooms. For most discussions in public, the terms literacy and education are used interchangeably.

It is thus established that one of the primary causes for poverty is the lack of education. Through out the world, poverty and illiteracy are seen to exist together. They go hand in hand. Illiteracy leads to ignorance due to lack of education and learning, and this is the root cause of most ills among the poor sections of a society. Social scientists tell us that ignorance and the prevalence of poverty are the common visible manifestations of illiteracy.

The people trapped in poverty do not have the educational qualifications for gainful employment. They lack earning capacity to meet the day-to-day expenses of even the basic needs to maintain themselves and their families. They do not possess the mental and physical skills and are not employable for the jobs available in the industry and corporate sectors.

They only have their manual labour to offer and do low-end unskilled or at best the semi-skilled jobs, with low compensation. They can do such jobs only when they are able bodied and fit for manual work. The society labels them as poor people. The Hindi term Nirdhan, meaning one without money, aptly describes a poor person. Such persons do not have regular salaried jobs where the employees are paid monthly and thus do not have money to buy for their needs.

They earn low wages and their families thus do not have access to good houses, clean piped water, air and ventilation, hygienic environment, medical and healthcare, security of life and limb. wholesome nutrition and good schooling. Their living conditions often lead to sickness and disease but they lack financial means to access the clinics and hospitals for treatment and regain health. The life expectancy of this section of our society is lower than the well to do segments of the society. The productive years of such people are also less than the people who earn enough to provide for themselves

and their families. Most of them are day wagers. They earn for the day they work. When they fall sick and do not work, they do not earn for the days missed.

Often such untreated health problems become chronic with time and become more serious and limit their ability to work, causing loss of income. Poor are thus pushed to the margins of the society and find it almost impossible to break out of the vicious hold of poverty.

It is the common experience of all mankind through centuries of civilizations in different parts of the world that education is a remedy against ignorance and poverty. It works without exception. All sections of mankind agree that education is a sure way to pull the poor out of poverty. Education provides access to gainful employment and therefore access to money, a basic resource for living in a civilized society.

Once out of poverty, the individuals become suitable for employment and are able to work and earn their living by respectful means. They join the mainstream and become productive citizens of the society and the country. They contribute towards healthy functioning of various organs of the state in whatever jobs they are employed. The educated people, both men and women, become workers, supervisors, superintendents, scientists, technologists, engineers, educators, leaders, thinkers, lawyers, doctors and help develop society in all spheres of life.

It is recognized that education leads to learning and knowledge. All the progress and development of mankind over the past millenia is attributable to learning through organised system of providing education from the young age. Knowledge is now divided into many departments, subjects and branches. Through successive research and development in education and science over centuries man has made strides in medicine, mathematics, languages, finance, banking, astronomy, automation, travel, engineering, technology, space travel, computers, artificial intelligence and such other fields.

Benefits of education are many. For our society, where there is still a sizeable section shackled in poverty, we focus in this article on the benefits of education in alleviating poverty. Illiteracy is one fundamental reason and the root cause for the prevailing poverty. The governments at the center and state level, and also the private institutions, are constantly engaged in providing education to the illiterate. There are programs which promote literacy among the adult population who missed schooling in their childhood. For those who have missed their schooling at young age, such opportunities are provided by the state through adult literacy programs and opportunities.

By and large, our people have understood the benefits of education and also the ills of illiteracy. As a thumb rule it is said that on average an educated person earns three times more than an uneducated person over a life-time. With the additional financial resources that become available to him or her, an educated person leads a better living standard for self and family than an illiterate person.

Our scriptures enshrine this common wisdom which has been common and true in all ages. The wise sages conclude that the education functions as the financial resource of a poor man. Money is thus called Sarbsadhan, meaning a resource which commands all other resources and solves most problems confronted by the living in their life. A person with money can buy whatever he needs and thus commands all other resources.

It is also said that a scholar can earn money in his native country as well as in a foreign land just from his knowledge and wisdom acquired from education. An educated person is respected everywhere for his knowledge. It is an established fact that any human society has permanent and standing need for the educated, wise and knowledgeable scholars, even if such a person is a foreigner and not a native. There is never a time in a human society when there are enough learned people and more are not needed.

The scriptures also point out that education and learning are personal to an individual. Once acquired they become part of him or her. They go with him wherever he goes. Also, like other material possessions the learning and knowledge cannot be stolen. A much-valued quality we acquire from education, knowledge and wisdom, is discretion, commonly referred in our scriptures as 'Vivek'.

With the quality of discretion or Vivek we are able to differentiate right from wrong in a situation when an uneducated mind would be confused to make the right choice. With discretion, we avoid the pitfall of making a wrong decision and then suffering its manifold harmful consequences. These may be financial loss, hurting or damaging a relationship or even a physical injury and hurt. The consequences of a wrong decision can be much more serious, and often which are totally unintended. The only way to acquire knowledge is through learning it from a teacher.

The hard statistics also support the conclusion that

education leads to higher earnings, wealth creation and property. In 2004-5, the national census of India revealed different levels of poverty among our population at about 71.4 percent. In 2011-12 it had come down to 21.8 percent. It is also known that during this period the literacy among our people has also been steadily increasing. In 2004 the literacy among the Indian people was 61 % and in 2011 it had improved to 74.04 %. It should have come down further over the twelve years since then.

It can be seen from these figures that as the literacy levels increased among our people there was a corresponding reduction in the poverty levels. The literacy level for the year 2023 is 77.7 %. There have been further improvements in the literacy since and the figure for the year 2021 in the public domain is 14.96 %.

The broad correlation between improvement in literacy and improvement in the financial earnings of our people pulling them out of poverty and putting them in the middle-income group is clearly established.

There is something more that these statistics do not reveal. The shift of such large number of our population out of poverty means they have increased access to money for the family. This access to improved financial resources would lead the individual and the family further to better education and schooling for the young of the family, access to higher education, better occupational training, better job opportunities, better nutrition, improved health, better living conditions, access to preventive health issues and better access to qualified medical help and assistance when needed. Once a family breaks out of the grips of poverty, it redoubles its effort to educate its young and ensures that it stays out of poverty by an upward mobility to better life.

We have seen, so far, the benefits of basic education for the people at the lower rungs of the society. This is needed but as a developing and aspiring nation, it is not enough. As a nation, we also need to focus on excellence in all departments of education. There is also a need for our students to achieve excellence in their learning. Entering institutions of higher learning and giving average performance do not tap the full potentioal of the youth nor the society and the nation at large.

It is beyond doubt that rooting out illiteracy is one huge basic and essential objective for us. We have succeeded in this effort to a large extent, though some work still remains to be done. There is little doubt that illiteracy will be wiped out from our country in our life times. Now we must focus on excellence in all fields and at all levels of education to attain international standards and make qualitative difference to the science, technology, medicine, space sciences, manufacture, semiconductors, chemicals, agriculture and other areas of significance. Excellence demands hardwork by the students and the educated minds at all levels. There is no alternative.

It is an irony that while there is unemployment in the country, we often read reports of statements by the captains of industry that they have the jobs but there are no candidates with employable qualifications and skills needed for the jobs. There is little point in producing diploma holders, graduates and post graduates who do not match the employment needs of the industry and the job market.

This needs immediate attention by the state, the industry and the academia to modify the curriculum and ensure that the youth is educated and skilled to be readily employed by the nation. The industry has to compete in the international market. They must make quality products at competitive prices. This will be possible only with better and qualified youth passing out from the universities, industrial training institutes and institutes of technologies.

At times, students going for higher education need financial support to continue their education. The government and the financial institutions like banks have a mandate to finance the education and especially the higher education to ensure that the brilliant minds are not deprived of opportunities to reach their full potential. This is in our long-term national interest.

India thus needs both, the basic education and the excellence in education. There is evidence that our country and countrymen understand what needs to be done. We only have to march ahead with dedication, determination and will to succeed.

Retd. Chief Manager
Punjab & Sind Bank

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 7 30-05-2024 12:45:22

Heartly Congratulations to the Newly Promoted Executives

Promoted form DGM to GM

Shri Nilendra K Prabhat

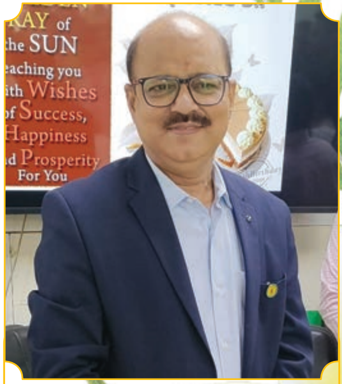

Shri Vinod Kumar Pandey

Promoted form AGM to DGM

Shri Milind Buchke

Shri Malkit Singh

Smt. Sumeet Kaur Sethi

Shri Jaspreet Singh Mann

Shri Kuldip Singh

Shri Gurdeep

Shri K B Manikantan

Zonal Office Guwahati Organised Branch Incharges Meeting in the presence of our worthy MD & CEO, Shri Swarup Kumar Saha.

Manpreet Sikka

ALL ABOUT NOMINATION IN BANKS

A nominee in a Bank Account is an Individual (only) who the holder of the account trusts and appoints as a nominee who will receive the funds from the Bank in case of death of the account holder.

His duty is to act as a trustee only and receive funds/ proceeds of the Bank account on the behalf of the legal heirs of the account holder as per the Inheritance laws.

It is not mandatory to add a nominee but the process of transferring funds in the absence of the account holder (deceased depositors) gets easy. It is therefore necessary that nomination facility is popularized and customers are made aware of its advantages while opening a deposit account or opting for the lockers. Branches should inform account holder about the availability of nomination facility, and recommend his/ her availing the option. Nomination facility, if availed, would ensure smooth settlement of claim to the nominee.

There can be only one nominee for a deposit account whether held singly or jointly. In multiple Bank accounts one can appoint different nominees. A nomination, cancellation of the nomination or variation may be made at any time during which the deposit is held by the bank to the credit of the depositor by the account holder during their life by submitting a written request to the Bank.

Nomination does not imply ownership in any form. Only after the death of the depositor in the case of a single account or the death of all depositors in case of joint account does nominee comes in the picture to collect the funds from the bank on behalf of the legal heirs of the deceased. Banks get a valid discharge by making payment of the balance outstanding in a depositor's account at the time of his death or delivering contents of locker or articles kept in safe custody to the nominee.

Nomination cannot be made in accounts where deposits are held in a representative capacity like Trust accounts. A trust cannot be made a nominee.

In case of death of the account holder the nominee will have to approach the Bank and submit the death certificate of the deceased account holder and proof of nominee's identity (such as Election ID Card, PAN Card, and Passport etc.). The Bank after verification of the documents will transfer the funds from the deceased persons account to the nominee's Bank account. But the nominee cannot withdraw any amount directly from the deceased persons account.

Nomination facility is available in respect of lockers hired singly as well as jointly. In respect of lockers in joint names, nomination rules are applicable only if lockers are operated jointly. Where the lockers are hired jointly, on the death of any of the joint hirers, the contents of the locker are allowed to be removed only jointly by the nominee(s) and the survivor(s) after an inventory is taken in the prescribed manner. In such a case, after such removal preceded by an inventory, the nominee and surviving hirer(s) may still keep the entire contents with the same Bank, if they so desire, by entering into a fresh contract of hiring a locker.

In the event of the death of one (or more but not all) of the joint locker hirers the nominee(s) will be jointly allowed to access the locker and remove the contents on identification and verification of proof of death of the locker hire(s) along with the surviving hire(s).

In the event of death of both/ all joint locker hirers, the nominee(s) will be allowed to access the locker and remove

the contents on establishing his/ her/ their identity and verification of proof of the death of the hirers.

Before permitting surviving hirer(s) and/ or nominee(s) to remove contents of the Safe Deposit Locker, the Branch would prepare an inventory of the articles in their presence along with two independent witnesses.

1. Nomination facility is governed under Section 45 ZA to ZF incorporated in Banking Regulation Act 1949 & rules framed under Banking Companies (Nomination) Rules 1985 which permits Banks to pay dues to the nominee without asking for any succession certificate, letter of administration or any order.
2. It is optional but facilitates the family to get the death claim in event of death of the account holder (deceased family member). It ensures the smooth settlement of the claim by the Bank.
3. It does not take away the rights of the legal heirs on the estate of the deceased. As a trustee, the nominee is accountable to the legal heirs.
4. Available on all Bank Deposit accounts of individuals including sole proprietorship, NRI accounts opened in individual capacity, safe deposit lockers and safe custody articles. A Resident can nominate a NRI as a nominee but repatriation of amount will be only after permission from RBI.
5. Nomination not allowed in representative capacity-HUF, Companies, Firms, Trusts, attorney or mandate holder.
6. Nomination cannot be accepted in an overdraft or cash credit account even if it has a credit balance.
7. Maximum nomination in Individual/Joint accounts (E/S) Anyone, Jointly - 1 nominee
8. Maximum nomination in Locker account Single or Joint (E/S) Anyone - 1 nominee
9. Maximum nomination in Locker account Jointly with Joint mandate - 2 nominees
10. Nomination is permitted only in case of single safe custody of articles facility-1 nominee
11. Only Individuals/sole proprietor can be a Nominee. Minor can also be a nominee but cannot nominate himself. A Person legally empowered to operate minor account can file nomination on behalf of the minor.
12. Nomination can be cancelled/changed anytime by the Depositor.
13. Nomination will continue even after renewal of FDR except when title of account is changed.
14. Witness is not required in case of a literate person account. Two independent witnesses are required for illiterate persons.
15. Record of Nomination-Acknowledgement of Nomination and Registration of nomination to be done by the Banks. FORM NO. DA-1 (REGISTRATION), DA-2 (CANCELLATION), DA-3 (VARIATION) FOR DEPOSIT ACCOUNTS. Form SC1, SC2, SC3 respectively for Safe custody articles, SL1/ SL1A, SL2, SL3/SL3A for Locker accounts.

Officer
ZO Delhi-I

Conratulations to PSB Hokey Team

PSB Hockey Team has won the 5th Edition of Marshal of the Air Force Arjan Singh Memorial Hockey Tournament 2024, against IAF (India Air Force Team).

Opening of New Branch in Barma Camp, Dimapur (Nagaland)

The expansion underscores Banks unwavering commitment to providing banking services and fostering financial inclusion in the region by strategically placing branches in various districts.

Shri Swarup Kumar Saha (MD & CEO) alongwith DGP Rupin Sharma inaugurated the Branch.

मार्च 2024 को समाप्त तिमाही हेतु बैंक के वित्तीय परिणाम

राशि करोड़ में

मानक	चतुर्थ तिमाही, वित्तीय वर्ष 2022–23	चतुर्थ तिमाही, वित्तीय वर्ष 2023–24	वार्षिक विकास–दर
परिचालन लाभ	536	336	(37.31)
शुद्ध लाभ	457	139	(69.58)
परिसंपत्ति पर प्राप्ति (आरओए) (%)	1.33	0.38	(95) बीपीएस
लाभांश (आरओई) (%)	28.43	7.29	(2114) बीपीएस
अग्रिम–उपज (वाईओए) (%)	7.85	8.67	82 बीपीएस
लागत–आय अनुपात (%)	56.45	69.49	1304 बीपीएस
गैर–ब्याज आय	547	413	(24.50)
ऋण–जमा अनुपात	73.84	71.99	(185) बीपीएस
स्लिपेज अनुपात	0.63	0.47	(16) बीपीएस
सकल गैर निष्पादित आस्ति (%)	6.97	5.43	(154) बीपीएस
निवल गैर निष्पादित आस्ति (%)	1.84	1.63	(21) बीपीएस
कुल वसूली एवं उन्नयन	1153	640	(44.49)
ऋण लागत (%)	(0.38)	0.14	52 बीपीएस
एनआईएम (%)	2.53	2.32	(21) बीपीएस
कासा जमा	36833	38708	5.09
कुल जमा	109665	119410	8.89
कुल ऋण	80982	85964	6.15
कुल व्यापार	190647	205374	7.72

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 13 30-05-2024 12:45:34

दिनांकित 31.03.2024 तक

राशि करोड़ में

आंचलिक कार्यालय	कुल जमा (थोक जमा के अलावा)			सकल अग्रिम			कासा जमा (अतिदेय सावधि जमा के अलावा)		
	मार्च 2023	मार्च 2024		मार्च 2023	मार्च 2024		मार्च 2023	मार्च 2024	
		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि
अमृतसर	5367	5795	5741	1946	2395	2077	2373	2540	2472
बरेली	1884	2085	2086	2080	2445	2253	1244	1360	1380
भटिंडा	1809	2055	1997	1545	1875	1651	880	970	941
भोपाल	2346	2685	2434	1340	1635	1424	919	1060	1053
चंडीगढ़	6686	8205	7027	2370	2900	2519	2863	3995	2905
चेन्नई	820	960	814	2889	3275	3480	311	345	322
देहरादून	2808	3330	3109	1266	1590	1393	1436	1650	1576
दिल्ली – I (सीबीबी के अलावा)	5434	6179	5624	2605	3185	2110	2040	2311	2006
सीबीबी दिल्ली	390	401	351	10164	10915	12504	163	169	125
दिल्ली – II	7318	8015	7725	1656	2200	1723	2794	3100	2916
फरीदकोट	3202	3590	3459	1754	2085	1971	1503	1700	1596
गांधीनगर	543	660	584	1122	1375	1159	186	225	220
गुरदासपुर	3524	3975	3877	1428	1700	1569	1638	1850	1759
गुरुग्राम	2276	2670	2424	1498	1905	1872	1075	1260	1130
गुवाहाटी	1479	1925	1738	407	525	493	888	1155	1037
होशियारपुर	3512	4180	3801	969	1180	1033	1502	1900	1604
जयपुर	1781	2110	1942	2132	2640	2100	775	900	900
जयपुर	1781	2110	1942	2132	2640	2100	775	900	900
जालंधर	6156	6905	6526	1373	1700	1413	2503	2765	2584
कोलकाता	3433	4190	3635	3568	4150	4414	1443	1800	1464
लखनऊ	3924	4380	4058	2559	3400	2788	1872	2065	1924
लुधियाना	4279	5290	4500	2175	2575	2337	1915	2395	2005
मुंबई (सीबीबी के अलावा)	1973	2480	2062	1319	1410	1272	679	849	709
सीबीबी मुंबई	406	510	267	14019	14990	13946	298	381	207
नोएडा	3133	3635	3514	1215	1550	1301	1622	1800	1794
पंचकूला	3149	3765	3404	2165	2600	2152	1429	1695	1532
पटियाला	3667	4210	4036	2331	2700	2518	1432	1700	1521
विजयवाड़ा	1383	1815	1511	8898	9300	8103	549	760	629
बैंक के कुल आंकड़े	**82682**	**96000**	**88244**	**80982**	**92000**	**85964**	**36444**	**42700**	**38313**

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 14 30-05-2024 12:45:34

अंचल कार्यालयों का कार्य प्रदर्शन

राशि करोड़ में

आंचलिक कार्यालय	खुदरा ऋण			कृषि ऋण			सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम ऋण			गैर निष्पादित आस्तियाँ		
	मार्च 2023	लक्ष्य		मार्च 2023	लक्ष्य		मार्च 2023	लक्ष्य		मार्च 2023	लक्ष्य	
		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि
अमृतसर	633	890	728	932	1060	963	377	440	385	156	143	182
बरेली	312	440	361	1234	1410	1298	483	565	593	216	192	259
भटिंडा	318	450	361	1015	1175	1023	209	245	257	64	60	66
भोपाल	397	555	425	191	215	198	725	850	774	90	83	98
चंडीगढ़	1069	1480	1228	456	525	415	692	810	722	160	148	150
चेन्नई	602	840	651	28	30	20	489	575	530	124	115	105
देहरादून	460	650	502	412	475	420	391	460	426	85	76	112
दिल्ली – I (सीबीबी के अलावा)	867	1214	790	33	42	132	887	1080	948	132	130	168
सीबीबी दिल्ली	55	66	34	12	13	18	332	345	214	53	40	11
दिल्ली – II	834	1150	928	75	85	82	638	755	626	57	52	46
फरीदकोट	318	450	382	1171	1335	1283	252	295	307	98	88	98
गांधीनगर	221	310	253	131	145	108	318	370	355	48	44	70
गुरदासपुर	353	500	410	698	800	736	332	390	384	151	130	163
गुरुग्राम	752	1040	807	207	235	213	535	625	546	96	88	96
गुवाहाटी	197	275	250	21	25	23	185	215	220	21	19	22
होशियारपुर	232	325	287	564	650	573	168	200	172	65	56	74
जयपुर	622	880	680	847	980	778	662	775	636	112	100	157
जालंधर	473	660	556	370	425	349	442	515	412	94	83	101
कोलकाता	741	1020	840	139	160	152	1007	1180	1047	306	276	345
लखनऊ	835	1155	896	280	320	272	1045	1225	1058	203	177	249
लुधियाना	451	630	527	639	730	646	677	795	699	186	166	196
मुंबई (सीबीबी के अलावा)	600	786	667	45	51	41	433	508	387	162	152	86
सीबीबी मुंबई	3	4	2	123	139	69	501	587	324	0.01	0.01	0.03
नोएडा	652	905	754	173	195	185	320	375	361	82	73	86
पंचकूला	583	820	650	823	950	803	488	570	425	138	126	146
पटियाला	477	670	582	1111	1260	1154	354	415	420	105	98	101
विजयवाड़ा	598	835	640	59	70	69	457	535	427	53	47	80
बैंक के कुल आंकड़े	**13947**	**19600**	**16034**	**11787**	**13500**	**12524**	**14857**	**17500**	**15909**	**5648**	**5418**	**4665**

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 15 30-05-2024 12:45:34

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)

अलीमुद्दीन सिद्दकी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, एक प्रकार से विज्ञान और इंजीनियरिंग क्षेत्र है जो कम्प्यूटर सिस्टम को मानव बुद्धि के कामों को करने की क्षमता प्रदान करता है। यह तकनीकी और गणितीय तकनीकों का एक समृद्ध क्षेत्र है जो मशीनों को सीखने, समझने, निर्णय लेने और समस्याओं को हल करने की क्षमता प्रदान करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, विभिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य सेवाएं, वित्तीय सेवाएं, संचार, उत्पादन और संगठन आदि में अपना अनुप्रयोग उचित प्रकार से कर रहा है।

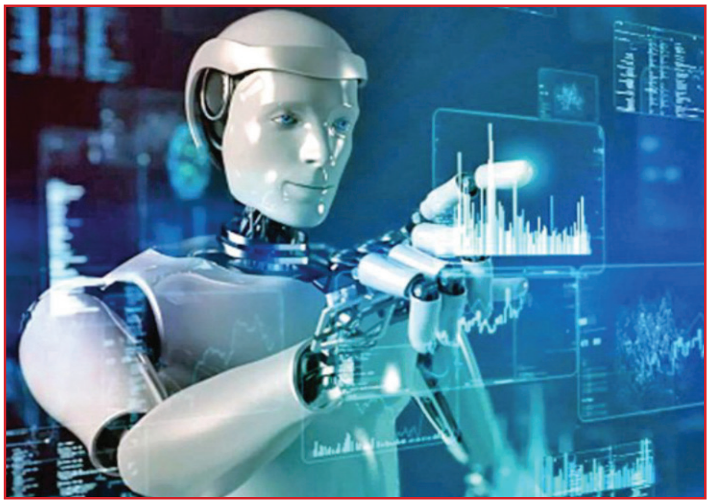

जॉन मैक्कार्थी इस क्षेत्र के सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक थे। कम्प्यूटर विज्ञान और एआई में उनके शानदार काम के कारण उन्हें ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जनक'' के रूप में जाना जाता है। मैक्कार्थी ने 1950 के दशक में ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' शब्द गढ़ा था। जॉन मैकार्थी के अनुसार यह बुद्धिमान मशीनों, विशेष रूप से बुद्धिमान कम्प्यूटर प्रोग्राम को बनाने का विज्ञान और अभियांत्रिकी है अर्थात यह मशीनों द्वारा प्रदर्शित किया गया इंटेलिजेंस है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्त्वः–

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्त्व विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। यह निम्नलिखित क्षेत्रों में बहुत सारे महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करता हैः

(1) **स्वास्थ्य सेवाएंः** कृत्रिम बुद्धिमत्ता मेडिकल डायग्नोस्टिक्स, उपचार योजनाओं, रोगों के लक्षणों की पहचान और रोगों के लिए नवीनतम उपचारों की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(2) **वित्तीय सेवाएंः** बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग वित्तीय विश्लेषण, अनुमानन और बिजनेस निर्णयों में किया जाता है।

(3) **विनिर्माणः** कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से विनिर्माण क्षेत्र में ऑटोमेशन, प्रोडक्ट डिज़ाइन, उत्पादन प्रक्रिया का अद्यतन और कार्यक्षमता में सुधार होता है।

(4) **संचारः** सोशल मीडिया एल्गोरिदम, भाषा अनुवाद और वीडियो संशोधन के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया जाता है।

(5) **शिक्षाः** कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा में व्यक्तिगतकृत पाठ्यक्रम, छात्रों के प्रगति की अनुगामी विश्लेषण और शिक्षकों के लिए सहायक उपकरण प्रदान करता है।

(6) **उत्पादनः** औद्योगिक उत्पादन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से अधिक स्वचालित और कार्यक्षम उत्पादन प्रक्रिया संभव होगी, जिससे कारखानों में उत्पादन की गुणवत्ता और योग्यता में सुधार होगा।

(7) **सुरक्षाः** कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से सुरक्षा क्षेत्र में अधिक उन्नत और व्यक्तिगतकृत सुरक्षा तंत्र विकसित होंगे, जो साइबर हमलों के खिलाफ सजगता और सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे।

भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाएँः–

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत में शैशवावस्था में है और देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें इसे लेकर प्रयोग किये जा सकते हैं। देश के विकास में इसकी संभावनाओं को देखते हुए उद्योग जगत ने सरकार को सुझाव दिया है कि वह उन क्षेत्रों की पहचान करें, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल लाभकारी हो सकता है।

सरकार भी चाहती है कि सुशासन के लिहाज से देश में जहां संभव हो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल किया जाए। सरकार ने उद्योग जगत से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस्तेमाल के लिये एक मॉडल बनाने

में सहयोग करने की अपील की है। उद्योग जगत ने सरकार से इसके लिये कुछ बिंदुओं पर केंद्र करने को कहा हैः

(1) कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिये देश में एक अथॉरिटी बने जो इसके नियम–कायदे तय करें और पूरे क्षेत्र की निगरानी करे।

(2) सरकार उन क्षेत्रों की पहचान करें, जहाँ प्राथमिकता के आधार पर इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

(3) ऊर्जा, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, कृषि आदि इसके लिये उपयुक्त क्षेत्र हो सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने में सरकार की भूमिकाः–

(1) राष्ट्रीय स्तर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने के लिये नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है। इसमें सरकार के प्रतिनिधियों के अलावा शिक्षाविदों तथा उद्योग जगत को भी प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।

(2) वर्तमान बजट में सरकार ने फिफ्थ जनरेशन टेक्नोलॉजी स्टार्ट अप के लिये 480 मिलियन डॉलर का प्रावधान किया है, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग इंटरनेट ऑफ थिंग्स, 3–डी प्रिंटिंग और ब्लॉक चेन शामिल हैं।

(3) इसके अलावा सरकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग, बिग डाटा इंटेलिजेंस, रियल टाइम डाटा और क्वांटम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण, मानव संसाधन और कौशल विकास को बढ़ावा देने की योजना बना रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता विज्ञान कम्प्यूटेशनल क्षमताओं को बढ़ाता है और नई संभावनाओं का ज्ञान लाता है जो मानव समस्याओं का समाधान करने में मदद करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य अन्य क्षेत्रों में भी उज्ज्वल है, जिससे हमारी जीवनशैली में सुधार और संभावनाएं बढ़ेंगी। भविष्य में, बुद्धिमान मशीनें कई क्षेत्रों में मानवीय क्षमताओं की जगह ले लेंगी। कम्प्युटर विज्ञान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक लोकप्रिय क्षेत्र बनता जा रहा है क्योंकि इसने मनुष्यों को उन्नत किया है।

अधिकारी
शाखा अलीगढ़

Pradeep Rai
Retired Chief manager
Punjab & Sind Bank

आंचलिक कार्यालय पटियाला में पीएसबी आओ खेलें का आयोजन

शाखा वटवा (अहमदाबाद) का शुभारंभ

श्री स्वरूप कुमार साहा (एमडी एवं सीईओ) शाखा का उद्घाटन करते हुए।

श्री स्वरूप कुमार साहा (एमडी एवं सीईओ) द्वारा ग्राहकों से आपसी संवाद किया गया।

विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में भारत के मजबूत कदम

बिभाष कुमार

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा फरवरी 2024 के प्रथम सप्ताह में वैश्विक अर्थव्यवस्था की सूची (जीडीपी) के आकार के हिसाब से जापान को पीछे छोड़ते हुए जर्मनी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। उस सूची में भारत का स्थान पांचवे नम्बर पर है। वैश्विक अर्थव्यवस्था के आकार के दृष्टिकोण से देखें तो भारत जापान और यूनाइटेड किंगडम के बीच स्थित है।

भारत सरकार के अंतरिम बजट 2024 से दो दिन पहले वित्त मंत्रालय द्वारा जारी किये गये दस्तावेज के अनुसार भारत अगले तीन वर्षों में $5 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, और "अगले छः से सात वर्षों में (2030 तक) 7 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षा रख सकता है"। इतने बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भारत सरकार के निरंतर प्रयास के साथ–साथ वैश्विक आर्थिक गतिविधियों के अनुकूल रहना सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण कारक होगा।

यूं तो भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी ताकत है, स्वंय का उपभोक्ता होना। कंज्यूमर अर्थव्यवस्था होने के कारण देश में उत्पादित सेवा एवं उत्पाद का लगभग 70 प्रतिशत हम सभी स्वंय उपभोग कर लेते है। घरेलू मांग की ताकत ने पिछले तीन वर्षों में अर्थव्यवस्था को 7% से अधिक की विकास दर पर बनाए रखा है। घरेलू मांग अर्थात् निजी खपत और निवेश में देखी गई मजबूती के साथ–साथ भारत सरकार द्वारा लागू किए गए सुधारों और उपायों के कारण इस दिशा में हम मजबूती से आगे बढ़ रहे है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था की विकास दर और उसकी संभावनाओं का गहराई से अवलोकन करें तो हम पाते हैं कि भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में मजबूत कदम बढ़ा चुका है।

विश्व की 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का अध्ययन करेंगे तो हम पाएंगे कि भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह कितनी आसान लेकिन चुनौतियां भरी है।

देश	जीडीपी (बिलियन डॉलर में)
1) यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका	27,974
2) चीन	18,566
3) जर्मनी	4,730
4) जापान	4,291
5) भारत	4,112
6) यूनाइटेड किंगडम (यू.के.)	3,592
7) फ्रांस	3,182
8) इटली	2,280
9) ब्राज़ील	2,272
10) कनाडा	2,242

(स्त्रोतः आईएमएफ)

उपरोक्त चार्ट को देखकर आप कह सकते है कि जीडीपी के आकार कि दृष्टि से आज की स्थिति में भारत से एकदम आगे जापान खड़ा है और भारत के पीछे ब्रिटेन। जापान आज अप्रत्याशित रूप से मंदी की चपेट में आ गया है। पिछले दो तिमाहियों से अर्थव्यवस्था के लगातार सिकुड़ने के बाद वहां मंदी ने दस्तक दे दी है। जापान का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वर्ष 2023 की आखिरी तिमाही में एक साल पहले की तुलना में 0.4% घट गया। यह पिछली तिमाही में अर्थव्यवस्था में 3.3% की गिरावट के बाद आया।

जापान सरकार (कैबिनेट कार्यालय) के आंकड़े यह भी संकेत देते हैं कि देश ने दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अपना स्थान जर्मनी से खो दिया है अर्थात आईएमएफ द्वारा जारी वैश्विक अर्थव्यवस्था की सूची में जापान को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की सूची से पिछड़कर चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की बातों की पुष्टि करती है। लगातार दो तिमाहियों तक आर्थिक संकुचन को आम तौर पर तकनीकी मंदी के रूप में परिभाषित किया जाता है। अक्टूबर 2023 में, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने अनुमान लगाया था कि (अमेरिकी डॉलर में मापे जाने) जर्मनी के दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जापान से आगे निकलने की संभावना है। यहाँ हमें यह

ज्ञात होना चाहिए कि आर्थिक विकास के साथ–साथ संबंधित देश की मुद्रा का डॉलर के मुकाबले मूल्य भी अर्थव्यवस्था के आकार को निर्धारित करने का एक महत्वपूर्ण कारक है।

नवीनतम आंकड़े बताते हैं कि डॉलर के मुकाबले जापानी मुद्रा (येन) भी कुछ समय से कमजोर हुई है। इस बात की पुष्टि टोक्यो में एक संवाददाता सम्मेलन में आईएमएफ की उप प्रमुख गीता गोपीनाथ ने भी की है कि जापान की रैंकिंग में संभावित गिरावट का एक महत्वपूर्ण कारण पिछले साल अमेरिकी डॉलर के मुकाबले येन का लगभग 9% गिरना था। येन अगर मजबूत हो जाता है, साथ ही देश की अर्थव्यवस्था में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की जाती है तो ऐसी स्थिति में जापान फिर से विश्व की तीसरी सबसे बड़ा अर्थव्यवस्था के स्थान को हासिल कर सकता है। यह जापान की वर्तमान स्थिति को देखते हुए असंभव प्रतीत होता है।

कमजोर घरेलू खपत के कारण जापान की अर्थव्यवस्था अप्रत्याशित रूप से सिकुड़ गई है, जिससे देश मंदी की ओर बढ़ गया है और इससे जर्मनी को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का अपना स्थान खोना पड़ा है। उपभोक्ता व्यय सहित सभी प्रमुख घरेलू मांग श्रेणियां नकारात्मक थीं। केवल बाहरी मांग, जिन वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात किया गया उसने सकारात्मक योगदान दिया। निजी खपत जो कि जापान की अर्थव्यवस्था का लगभग आधा हिस्सा है – में चौथी तिमाही में वार्षिक 0.9% की गिरावट आई है, क्योंकि जापानी उपभोक्ता भोजन, ईंधन और अन्य वस्तुओं के लिए उच्च कीमतों से जूझ रहे हैं। यह लगातार तीसरी तिमाही में गिरावट का प्रतीक है।

साठ (1960) के दशक में जापान को ऐतिहासिक रूप से "एक आर्थिक चमत्कार" कहा जाता था, जो द्वितीय विश्व युद्ध (हिरोशिमा व नागासाकी) परमाणु विभीषिका की राख से उभरकर अमेरिका के बाद दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। इसने 1970 और 1980 के दशक तक जारी रखा। लेकिन पिछले 30 वर्षों में अधिकांश समय जापान की अर्थव्यवस्था हिचकोले खाती रही है। कभी–कभार ही मामूली वृद्धि हुई है। विशेष रूप से 1990 में शुरू हुए वित्तीय बुलबुले के ढहने के बाद से मंदी या कहे आर्थिक रुग्णता बनी हुई है।

यूं तो जापानी और जर्मन दोनों अर्थव्यवस्थाएँ ठोस उत्पादकता वाले मजबूत छोटे और मध्यम आकार के व्यवसायों द्वारा संचालित हैं। जापान की मुद्रा (येन) के कमजोर और जनसंख्याकीय लाभांश के नकारात्मक (बढ़ती उम्र, घटती आबादी) पहलुओं से जूझने के कारण साठ और सत्तर के दशकों में हो रही विकास दर को प्राप्त करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन लग रहा है।

जापान की तरह, जर्मनी संसाधनहीन है, उसकी आबादी बूढ़ी हो रही है और वह निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर है। यूक्रेन में रूस के युद्ध के कारण ऊर्जा की बढ़ती कीमतों, यूरोज़ोन में बढ़ती ब्याज दरों और कुशल श्रम की लगातार कमी से यूरोप की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी हिल गई है।

ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था बीमार है तथा वह और भी बीमार होती जा रही है। फरवरी 2024 के प्रथम सप्ताह के आर्थिक आंकड़ों से स्पष्ट संदेश यह है कि लंबी अवधि की मंदी के कारण बेरोजगार लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा पिछले सप्ताह जारी किए गए आंकड़े समस्या की गंभीरता को दर्शाते हैं।

ब्रिटिश चैंबर्स ऑफ कॉमर्स में सार्वजनिक नीति के उप निदेशक जेन ग्रैटन ने कहा कि व्यवसायों में निष्क्रियता के उच्च स्तर और इसके आर्थिक प्रभाव के बारे में चिंता बढ़ रही है। इसका असर ग्रोथ और महंगाई पर पड़ रहा है। इसका नियोक्ताओं और व्यक्तियों दोनों पर प्रभाव पड़ता है। ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति विकसित देशों के समूह जी 7 के देशों जर्मनी, फ्रांस और इटली की तुलना में लंबे समय से आर्थिक परेशानियों के दौर से गुजर रहा है। इस क्रम में पिछले कई वर्षों में कई प्रधानमंत्री तक को बदलने की नौबत आ गई है।

पिछले कुछ वर्षों में डॉलर और यूरो के मुकाबले स्टर्लिंग कमजोर हुआ। निवेशकों ने इस साल बैंक ऑफ इंग्लैंड (बीओई) द्वारा ब्याज दरों में कटौती पर अपना दांव लगाया और उद्योगपति ने 6 मार्च 2024 को आने वाले बजट योजना में सरकार से अधिक मदद की मांग की।

ब्रिटेन जापान के साथ आर्थिक मंदी के दल–दल में गिरता जा रहा है। हालांकि इसकी अवधि अल्पकालिक और ऐतिहासिक मानकों के अनुसार कम प्रभावी हो सकती है। वर्ष 2019 के अंत के ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था अपने तत्कालीन स्तर से सिर्फ 1% अधिक है, जो कि कोविड–19 महामारी आने से पहले थी।

विश्लेषकों का कहना है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन में यह पहला अवसर आया है जब दो राष्ट्रीय चुनाव के बीच लोगों के जीवन स्तर में इतनी भारी गिरावट देखने को मिली है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) ने कहा कि वर्ष 2022 की तुलना में ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था 2023 में 0.1% बढ़ी है। एक अनुमान है कि वर्ष 2024 में उत्पादन थोड़ा बढ़ेगा लेकिन ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था में केवल 0.25% की वृद्धि होगी।

कहने का अभिप्राय यह है कि भारत के विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की डगर कठिन है परंतु उस तक पहुंचा जा सकता है। जीडीपी के दृष्टि से देखें, तो भारत की अर्थव्यवस्था जापान और ब्रिटेन के बीच में है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो जिस तरह जापान को पीछे छोड़ते हुए जर्मनी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जैसी चुनौती ब्रिटेन द्वारा भारत को नहीं मिल सकती है। साथ ही भारत की अर्थव्यवस्था जापान और जर्मनी के साथ कदम से कदम बढ़ाकर तेजी से बढ़ रही है। जापान को हम अगले वर्ष तक पीछे छोड़ते हुए विषय की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में निकाल चुके है। तीसरी अर्थव्यवस्था बनने में सिर्फ एक चुनौती हमारे सामने रहेगी वह है जर्मनी। भारत सरकार के अनुमानो के अनुसार अगले तीन वर्षों में $5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था लक्ष्य अगर हमें प्राप्त हो जाते हैं तो हम जर्मनी को भी तब तक पीछे छोड़ चुके होंगे।

प्रबंधक (राजभाषा)
स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, रोहिणी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

दिनांक 8 मार्च, 2024 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बैंक के कोरपोरेट कार्यालय में एमडी एवं सीईओ श्री स्वरूप कुमार साहा द्वारा अन्य उच्चाधिकारीगण की उपस्थिति में महिला कार्मिकों को संबोधित किया गया। इसके अतिरिक्त बैंक के प्रधान कार्यालय एवं स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज में विशेष गतिविधियों एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।

गणतंत्र दिवस का आयोजन

बैंक द्वारा आंचलिक कार्यालय गुरूग्राम में गणतंत्र दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बैंक के एमडी एवं सीईओ, कार्यकारी निदेशक महोदय सहित अन्य उच्चाधिकारीगण तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहें।

Pankaj Kumar

ARTIFICIAL INTELLIGENCE : ENDLESS OPPORTUNITIES AND GROWTH IN AGRICULTURE

Artificial intelligence has the potential to revolutionize the agriculture industry by increasing efficiency, reducing costs, and improving yields. Artificial Intelligence (AI) refers to the simulation of human intelligence in machines that are designed to think and act like humans. AI is an interdisciplinary field that encompasses computer science, engineering, mathematics, psychology and linguistics among others. The goal of AI is to create machines that can perform tasks that typically require human intelligence, such as recognizing speech, making decisions, and solving problems.

Today, AI is being used in a wide range of applications, including speech recognition, image analysis, autonomous vehicles, and recommendation systems, among others. As AI technologies continue to advance, they are likely to have a major impact on many industries and aspects of our daily lives. However, it's worth noting that AI is still in the early stages of development in agriculture, and there are still challenges that need to be addressed. For example, collecting accurate data can be difficult in remote and rural areas, and the cost of implementing AI systems can be prohibitive for some farmers.

Additionally, there is a need for further research to fully understand the potential environmental impact of using AI in agriculture. Despite these challenges, the potential benefits of AI in agriculture make it a promising area for continued investment and development

There are several types of AI, including

- Reactive Machines: These are AI systems that can only respond to what is happening in the present, without any memory of previous experiences.
- Limited Memory: These are AI systems that can remember past experiences and use that information to make decisions.
- Theory of Mind: These are AI systems that can understand human emotions, beliefs, and intentions.
- Self-Aware: These are AI systems that are capable of introspection and self-awareness, and can understand their own mental states and those of others.
- Precision Agriculture: AI-powered sensors and drones can collect data on soil health, crop growth, and weather patterns, allowing farmers to make more informed decisions about planting, irrigation, and pest control
- Crop Monitoring: AI algorithms can analyze images of crops to detect signs of disease, stress, or damage, which can help farmers to take prompt action to address issues and improve crop health.
- Livestock Management: AI systems can monitor the health and behaviour of livestock, providing early warnings of any potential issues and helping farmers to optimize feeding and care.

- Supply Chain Optimization: AI can analyze data on market demand, weather patterns, and other factors to help farmers make informed decisions about what crops to grow and when to sell them.
- Irrigation Management: AI algorithms can optimize irrigation schedules, reducing water waste and increasing crop yields.

Here are some AI tools that are commonly used in agriculture :-

- Precision Agriculture: Precision agriculture refers to the use of technology and data to improve the efficiency and productivity of farming operations. This can include the use of sensors, drones, and satellite imagery to collect data on soil moisture, crop health, and weather conditions, which can then be analyzed using AI algorithms to optimize crop management and maximize yields.
- Crop Monitoring and Forecasting: AI-powered tools can be used to monitor crops and forecast future yields based on data collected from sensors, drones, and other sources. These tools can help farmers to make informed decisions about planting, irrigation, and other critical aspects of crop management.
- Livestock Monitoring: AI-powered sensors and cameras can be used to monitor the health and behavior of livestock, providing farmers with data on weight, feeding patterns, and other indicators of health and wellbeing.
- Pest and Disease Management: AI can be used to detect and predict outbreaks of pests & diseases, enabling farmers to take proactive measures to control these threats and protect crops.
- Supply Chain Management: AI can be used to optimize the supply chain in agriculture, including the tracking and management of goods, the prediction of demand, and the optimization of logistics and transportation.
- Precision Irrigation: AI algorithms can be used to control and optimize irrigation systems, reducing water waste and increasing efficiency. These are just a few examples of the many AI tools that are being used in agriculture today. As AI technologies continue to advance, it is likely that we will see even more innovative applications in the years to come. Artificial Intelligence (AI) is rapidly gaining traction in India, with the government and private sector investing in its development and deployment.

Here's a brief overview of the current status of AI in India : -

- Government Support: The Indian government has made AI a priority in its national strategy, with the creation of the National AI Portal and the National AI Council. The government is also providing funding for research and development in AI and promoting collaboration between academia, industry, and government.
- Private Investment: Major technology companies such as Microsoft, Google, and Amazon have established AI research centers in India, and local start-ups are also exploring the potential of AI in sectors such as healthcare, agriculture, and financial services.
- Research and Development: India is making significant investments in AI research and development, with numerous universities and research institutes working on cutting-edge AI projects. These efforts are helping to advance the field and position India as a leader in AI innovation.
- Adoption across sectors: AI is being adopted across various industries in India, including healthcare, financial services, retail, and transportation. For example, in healthcare, AI is being used to develop personalized treatments and improve medical imaging, while in financial services; it is being used for fraud detection and credit scoring. Overall, AI is a rapidly growing field in India, with significant investments from both the government and private sector. The country's large talent pool and rapidly developing AI ecosystem position it well for continued growth in the years to come.

While the potential benefits of AI in agriculture are significant, there are several reasons why farmers have not yet widely adopted these technologies

- Cost: One of the main barriers to the widespread adoption of AI in agriculture is the cost of implementing these systems. The high upfront costs of purchasing and installing AI-powered sensors, drones, and other equipment can be prohibitive for many farmers, especially those operating on smaller scales.
- Lack of Awareness: Many farmers may not be aware of the potential benefits of AI and the available technologies. This can be due to a lack of access to information and resources, or a lack of exposure to AI and its applications.
- Technical Expertise: Implementing AI systems often requires a high level of technical expertise, which can be a barrier for farmers who are not familiar with these technologies. This can be particularly challenging for older farmers who may not have the skills or experience to adopt new technologies.
- Data Quality: Collecting accurate and reliable data is critical for the success of AI in agriculture. However, this can be difficult in remote and rural areas where infrastructure is limited, or where weather conditions can disrupt data collection.
- Resistance to Change: Finally, some farmers may be resistant to adopting new technologies, especially if they have been farming in a traditional way for many years. This can be due to a lack of trust in new technologies, or a preference for established methods that they are familiar with. Despite these challenges, the potential benefits of AI in agriculture make it a promising area for continued development and investment. As AI technologies become more affordable and accessible, and as farmers become more familiar with their capabilities, it is likely that we will see greater adoption of AI in the agriculture industry in the years to come.

Here are some ways to motivate farmers to adopt AI :-

- Education and Awareness: Providing farmers with information about the potential benefits of AI and the available technologies can help to increase their understanding and acceptance of these solutions. This could include workshops, training programs, and demonstrations of AI systems in action.
- Financial Incentives: Governments and private organizations can provide financial incentives to farmers who adopt AI technologies. This could include subsidies, tax credits, or investment programs that help to offset the cost of purchasing and implementing AI systems.
- Collaboration and Partnership: Encouraging collaboration and partnership between farmers, technology companies, and research institutions can help to foster innovation and increase the development and adoption of AI in agriculture. This could include joint research projects, shared data resources, and technology transfer programs.
- Evidence-based Approaches: Providing farmers with evidence-based information about the benefits of AI can help to build trust in these technologies. This could include case studies, trials, and demonstrations that show the tangible benefits of AI in terms of improved yields, reduced costs, and enhanced productivity.
- User-friendly Solutions: Designing AI solutions that are user-friendly and accessible can help to increase adoption among farmers who may not be familiar with these technologies. This could include developing solutions that are easy to use, require minimal training, and integrate with existing tools and processes.

Overall, a combination of education, financial incentives, collaboration, evidence-based approaches, and user-friendly solutions can help to motivate farmers to adopt AI and unlock its full potential in the agriculture industry.

Senior Manager
HO Priority Sector Department

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय द्वारा शाखा महोली रोड मथुरा, (उत्तर प्रदेश) एवं शाखा डैम्पियन नगर (उत्तर प्रदेश) का दौरा किया गया।

प्रधानमंत्री सूरज पोर्टल का उद्घाटन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कोलकाता क्षेत्र के लिए आंचलिक कार्यालय कोलकाता के परिसर में उच्चाधिकारीगण एवं ग्राहकों की उपस्थिति में पीएम सूरज पोर्टल का उद्घाटन किया गया।

अंचल कार्यालयो में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

बैंक के विभिन्न अंचल कार्यालयों में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय चेन्नई

आंचलिक कार्यालय, दिल्ली–I

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

आंचलिक कार्यालय, गांधीनगर

आंचलिक कार्यालय, देहरादून

आंचलिक कार्यालय, विजयवाड़ा

श्री गोपाल कृष्ण, महाप्रबंधक की उपस्थिति में आंचलिक कार्यालय लुधियाना के अधीन शाखा जोधां के नवीन परिसर का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर शाखा में अरदास एवं पाठ का आयोजन किया गया।

Opening of New Branch at Dakhingaon, Assam

Important Circulars Issued by Different Department

Date	circular No.	Subject
		HO ACCOUNTS & AUDIT DEPARTMENT
26/3/2024	1021/2023-24	Circular for closure of trading window
26/3/2024	1016/2023-24	Master circular on Annual Closing -2023-24
20/3/2024	1006/2023-24	SOP ON Remittances
20/3/2024	1003/2023-24	Sop on Review of Internal Accounts at Zones
19/3/2024	996/2023-24	Perquisite Valuation For FY 2023-24
6/2/2024	862/2023-24	Income Tax Provision Related To Payment To Micro And Small Enterprises
1/2/2024	850/2023-24	Guidelines on Internal/ Office Accounts
		HO CREDIT MONITORING & POLICY DEPARTMENT
1/4/2024	43/2024-25	Introduction of Credit Mid Office
31/3/2024	1052/2023-24	Policy on Penal Charges in Loan Accounts
25/1/2024	828/2023-24	Renewal of Export Credit Insurance for Banks (ECIB)(WT-PC & WT-PS) issued by ECGC for 2023-24
19/1/2024	810/2023-24	Prudential Norms on Income Recognition, Asset Classification and Provisioning Pertaining To Advances
		HO KYC & AML CELL
4/3/2024	957/2023-24	Reserve Bank of India imposes monetary Penalty on ESAF Small Finance Bank Limited
4/3/2024	956/2023-24	Reserve Ba nk of India imposes monetary Penalty on Dhan Lakshmi Bank Ltd
12/1/2024	781/2023-24	SOP No. 14 Implementation of Sanction Lists UNSC/UAPA/OFAC etc
9/1/2024	766/2023-24	Amendment to the Master Direction (MD) on KYC
		HO FOREIGN EXCHANGE DEPARTMENT
28/3/2024	1036/2023-24	Notional Rate Circular Effective from 01-04-2024
21/3/2024	1013/2023-24	FCRA 2010 Receipt Of Foreign Contribution
6/3/2024	965/2023-24	Additional Confirmation For Payment Beyond Threshold Limit For Citi Bank NY
29/2/2024	940/2023-24	Notional Rate Circular Effective from 01-03-2024
29/2/2024	938/2023-24	Interest Rates On Foreign Currency (Non Resident) A/C Banks Scheme–FCNR(B)
24/1/2024	825/2023-24	SWIFT SOP 2023-24
6/1/2024	755/2023-24	Extension OF FCNR(B) Deposit Campaign
		HO FRAUD MONITORING DEPARTMENT
30/3/2024	1041/2023-24	Advisory on Cyber fraud for awareness to prevent fraud.
		HO GENERAL ADMINISTRATION DEPARTMENT
6/3/2024	967/2023-24	Change of Address of Bigbara (B1113), Kabirpur Kasganja (K1108) and Phase 2 Mohali (M0799) Branch.
29/2/2024	941/2023-24	Furniture Fixture Statement And Rate Of Depreciation For The Year 2023-2024
16/1/2024	795/2023-24	Standardization Manual for Branch Ambience
16/1/2024	787/2023-24	Pantone Colour to be used in Bank's Sign Boards(Lit & Non-Lit) installed at branches/offices
5/1/2024	752/2023-24	Change of Address of Raman (R0954) and P Road, Kanpur (K0483) Branch.
		HO GOVERNMENT BUSINESS DEPARTMENT
18/1/2024	808/2023-24	Interest Rate on National Savings Schemes
		HO HUMAN RESOURCES DEVELOPMENT DEPARTMENT
31/3/2024	1051/2023-24	Launching of HRMS Portal (Psb-Kutumb) on Internet
31/3/2024	1050/2023-24	Promotion Process 2024-25: Promotion From DY. General Manager (Tegs-VI) To General Manager (Tegs-VII)
31/3/2024	1049/2023-24	Promotion Process 2024-25: Promotion From Assistant General Manager (SMGS-V) To DY. General Manager (TEGS-VI)
31/3/2024	1048/2023-24	Promotion Process 2024-25: Promotion From Chief Manager (SMGS-IV) To Assistant General Manager (SMGS-V)
31/3/2024	1047/2023-24	Promotion Process 2024-25: Promotion From Senior Manager (MMGS-III) To Chief Manager (SMGS-IV)
31/3/2024	1046/2023-24	Promotion Process 2024-25: Promotion From Manager (MMGS-II) To Senior Manager (MMGS-III)
31/3/2024	1045/2023-24	Promotion Process 2024-25: Promotion From Officer (JMGS-I) To Manager (MMGS-II)
22/3/2024	1014/2023-24	Introduction Of Application For Noc To Visit Abroad In PSB-Kutumb (HRMS)
8/3/2024	972/2023-24	Mentorship Scheme For Women Officers Of The Bank (Sclae-I To Sclae-IV)
22/2/2024	3/2023-24	Pm-Daksh-Depwd Portal For Skilling And Employment Of Persons With Disabilities (PWDS)
29/1/2024	833/2023-24	Policy/guidelines on engagement of retired officers as Advisors in the Bank and appointment of Business/ Management/ Operational consultants on contractual basis
		HO LAW & RECOVERY DEPARTMENT
20/3/2024	1005/2023-24	Standard Operational Procedure For Monitoring Of Suit Filed Cases
20/3/2024	1004/2023-24	Standard Operational Procedure For "Performance Assessment Of The Advocate"

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 30 30-05-2024 12:46:06

Of Head Office From 01/01/2024 To 31/03/2024

Date	circular No.	Subject
19/3/2024	1000/2023-24	Standard Operating Procedure regarding handling Earnest Money Deposit (EMD) accounts for E-auction of mortgaged properties under Sarfaesi Act 2002
6/3/2024	960/2023-24	Revised Form no. 85: Court Proceedings Report and revised Form No. 85
6/3/2024	959/2023-24	Revised Certificate of Execution of Documents
23/2/2024	924/2023-24	Standard Format For Report Of Committee For Analysing Depletion In Value Of Security (Cads)
11/1/2024	815/2023-24	Policy For Utilization Of Services Of External Professionals/ Agencies/ Agents/ For Assisting Bank In Recovery In NPA/ Two Accounts
11/1/2024	777/2023-24	Policy For Management Of Recovery In Non- Performing Assets/ Technical Written Off Accounts
11/1/2024	6/2023-24	Policy For Transfer Of Stressed Loans To Asset Reconstruction Companies (Arcs)/ Permitted Transferees Including Portfolio Transfer
प्र.का. राजभाषा विभाग		
19/3/2024	997/2023-24	बैंक हाउस जर्नल नवोदय पत्रिका की मानदेय राशि में बढ़ोत्तरी
26/2/2024	933/2023-24	राजभाषा अंकुर में प्रकाशित होने वाली रचनाओं हेतु मानदेय
26/2/2024	932/2023-24	शाखा स्तर पर पुस्तकों की खरीद
HO MARKETING & INSURANCE DIVISION		
9/2/2024	877/2023-24	Bank's Policy On Cross Selling Of Third Party Products
16/1/2024	798/2023-24	Suspension of Business Conclaves, Seminars and felicitations related to Third Party Product till 31st March 2024
4/1/2024	745/2023-24	MAHI @ 85 Campaign
HO PLANNING & DEVELOPMENT DEPARTMENT		
30/3/2024	1038/2023-24	Opening of New Branch - Chichauli (C1620) Under Zone Lucknow
26/3/2024	1015/2023-24	Opening of New Branch - Karauta Urf Nebuiya (K1616) Under Zone Lucknow
16/3/2024	987/2023-24	Merger of Branch - Gujranwala Guru Nanak Khalsa College, Ludhiana (L0825)
16/3/2024	986/2023-24	PSB Udyam Current Account Product
28/2/2024	937/2023-24	Merger of Branch - Putligarh , Amritsar (A0863)
27/2/2024	935/2023-24	Zonal Office Ranking Model 2.0
21/2/2024	911/2023-24	Opening of New Branch - Brama Camp , Dimapur (D1619) Under Zone Guwahati
21/2/2024	910/2023-24	Opening of New Branch - Dhakhava (D1617) Under Zone Lucknow
17/2/2024	901/2023-24	Meger of Branch Dhab Wasti Ram , Amritsar (A0154)
7/2/2024	865/2023-24	Opening of New Branch - Dakhingaon FV (B1618) Under Zone Guwahati
12/1/2024	782/2023-24	PSB Gaurav Bachat SB Salary Product
11/1/2024	775/2023-24	Opening of New Branch - Kinabaga (K1611) Under Zone Vijayawada
HO PRIORITY SECTOR ADVANCES DEPARTMENT		
27/3/2024	1023/2023-24	Deendayal Antyodaya Yojana - National Urban Livelihood Mission (Day-Nulm) - Extension Of Scheme
5/3/2024	954/2023-24	PSB MSME Premier Scheme
4/3/2024	953/2023-24	PSB Scheme For Financing Dairy Development
4/3/2024	952/2023-24	PSB Scheme For Financing Farm Mechanisation
14/2/2024	800/2023-24	PSB MSME Top Up Scheme (For Existing Borrowers)
18/1/2024	767/2023-24	PSB Scheme For Financing Roof Top Solar (RTS) Projects
HO RETAIL LENDING DEPARTMENT		
5/3/2024	958/2023-24	Master Circular- Psb Apna Vahan
2/3/2024	948/2023-24	Advisory On Gold Loan
19/2/2024	907/2023-24	Dsa Policy Of Bank
8/2/2024	871/2023-24	Master Circular -PSB Commercial Vehicle Loan
HO GENERAL OPERATIONS DEPARTMENT		
16/2/2024	899/2023-24	Standard Operating Procedure (SOP) for payment and Settlement Systems- availability of uninterrupted clearing Operations
16/2/2024	898/2023-24	Forthcoming General Elections to Lok Sabha and Legislative Assemblies of Andhra Pradesh, Arunachal Pradesh, Odisha and Sikkim, 2024 – facilitation for opening separate bank account and cheque book to the prospective candidate/s
4/1/2024	749/2023-24	Activation of Dormant Accounts Campaign "PSB DEPOSIT SAVER" (05.01.2024 to 31.03.2024).

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 31 30-05-2024 12:46:06

CASH MANAGEMENT-EXCHANGE RULES & OMPOUNDING OF COUNTERFEIT CURRENCY

Pulkit Roy

The Management of Cash at Branches is one of the important task, an official has to perform, and so is the knowledge that we must have as Bankers about the guidelines of Reserve Bank of India for various types of cash related issues. First of all, we need to ask our self, as why the Bank Official are called the financial army of the country. Am I really doing something which can be referred to a job performed by Army? Well, the answer is yes. Army is responsible for guarding the borders so that any illegal migrant should not infiltrate into the Indian Territory. Likewise the financial army is responsible to guard the financial system from illegal infiltration of counterfeit note. Few Months Back, I got an opportunity to attend a training on this matter organised by RBI, Regional office, New Delhi. The agenda of this training was "Impounding of Counterfeit Currency & Note refund rules, 2018. RBI Officials were concerned about lowest contribution of Public Sector Banks in detection & impounding of counterfeit currency. Only 9 out of 100 counterfeit currency was detected by all Public Sector Banks and rest 91% by private financial institution.

Counterfeit Notes-

Counterfeit Notes are currency notes which have been made to look like genuine ones in order to deceive people. The practise of counterfeiting a currency is not new but is as old as money itself, it is also referred as world's second oldest profession. Even Before introduction of paper money, mixing of base metals with pure gold or silver used to take place, which was the mode of transaction in those times. Counterfeit is not confined just to Indian Currency but is also prevalent in other countries for currencies like US Dollar, Euro, GBP etc. In fact, some of the finest counterfeit bank notes are called super dollars because of their high image quality and imitation of real US Dollar.

Counterfeit Currency is source of many unlawful activities and also endangers trust of citizens on its own currency. Circulation of counterfeit notes promotes parallel economy and reduces the value of original currency due to increase in supply of money in an economy. It causes a danger of acceptability of our currency in other countries as well.

Hence, it is very important that each and every counterfeit note be impounded and stamped as "COUNTERFEIT NOTE".

In order to understand our currency better and identification of original bank notes, let us now look at features of Bank Notes.

Security Features of Rs.500/-

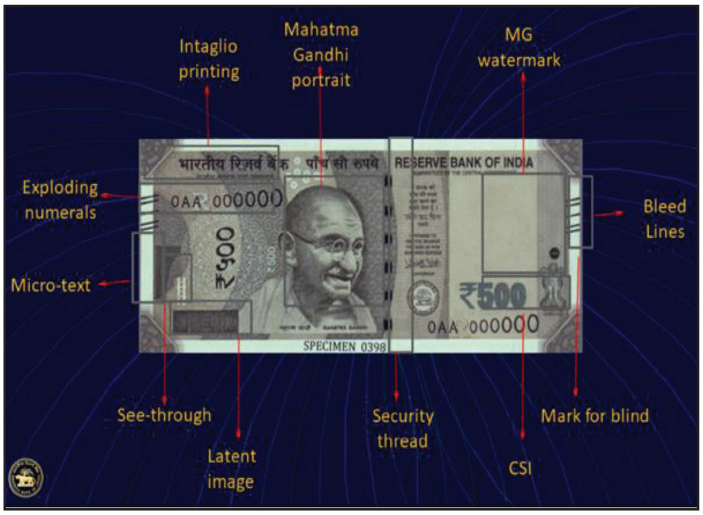

1. See through Register-The denomination of this Bank note can be seen through this pattern if posed against a light source.

Bottom Left

2. Latent image-Here the denomination of note is written in numerals and can be seen only when note is held horizontally at eye level.

3. Mahatma Gandhi portrait: Clear, detailed pattern over face of Sh. Mahatma Gandhi

4. Micro letters “RBI” & “500”.

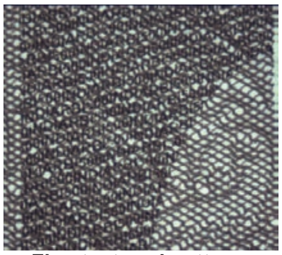

Fine textured pattern

5. Security thread with inscription “Bharat”- Multi Color, Color-Changing, 1.4mm wide, the thread Fluoresces in yellow on both sides under ultraviolet light. The thread is visible as a continuous line from behind when held up against light.

6. Portrait and electrotype watermark.

7. “RBI” written on Mahatma Gandhi’s spectacles.

8. Intaglio printing-Ink that can be felt on touch, specifically used to help a blind person identify the denomination of notes. Rs.500/- carries 5 bleed lines as shown in the picture above on both sides of notes. A Rs.500/- notes carries special mark for blind on middle of right sides wherein a Rs.500/- can be felt on touch inside a circle, also referred as mark for blind.

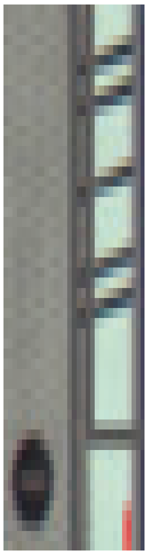

Security Features of Rs.200/-

1. See through Register-The denomination of this Bank note can be seen through this pattern if posed against a light source.
2. Latent image-Here the denomination of note is written in numerals and can be seen only when note is held horizontally at eye level.
3. Mahatma Gandhi portrait: Clear, detailed pattern over face of Sh. Mahatma Gandhi
4. Micro letters “RBI” & “200”.
5. Security thread with inscription “Bharat”- Multi Color, Color-Changing, 1.4mm wide, the thread Fluoresces in yellow on both sides under ultraviolet light. The thread is visible as a continuous line from behind when held up against light.
6. Portrait and electrotype watermark.
7. “भारत” written on Mahatma Gandhi’s spectacles.
8. Intaglio printing-Ink that can be felt on touch, specifically used to help a blind person identify the denomination of notes. Rs.200/- carries 2 hollow circles and 4 bleed lines as shown in the picture below on both sides of notes. An Rs.200/- notes carries special mark for blind on middle of right sides wherein an Rs.200/- can be felt on touch inside a english letter “H”, also referred as mark for blind.

Security Features of Rs.100/-

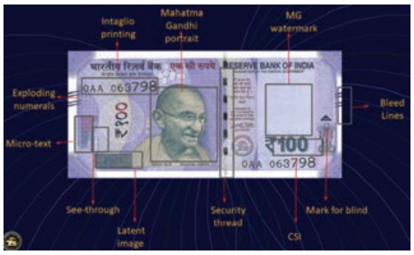

1. See through Register-The denomination of this Bank note can be seen through this pattern if posed against a light source.

Bottom Left

2. Latent image-Here the denomination of note is written in numerals and can be seen only when note is held horizontally at eye level.

3. Mahatma Gandhi portrait: Clear, detailed pattern over face of Sh. Mahatma Gandhi

4. Micro letters “RBI” & “100”.

Fine textured pattern

5. Security thread with inscription “Bharat”- Multi Color, Color-Changing, 1.4mm wide, the thread Fluoresces in yellow on both sides under ultraviolet light. The thread is visible as a continuous line from behind when held up against light.

6. Portrait and electrotype watermark.

7. “भारत” written on Mahatma Gandhi’s spectacles.

8. Intaglio printing-Ink that can be felt on touch, specifically used to help a blind person identify the denomination of notes. Rs.100/- carries 4 bleed lines as shown in the picture below on both sides of notes. An Rs.100/- notes carries special mark for blind on middle of right sides wherein an Rs.100/- can be felt on touch inside a traingle, also referred as mark for blind.

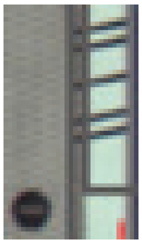

Rules for impounding a Counterfeit Currency-

If an official detects up to 4 notes in **SINGLE TRASACTION,** the note must be impounded and reported to Nodal Bank Officer on prescribed format (AnnexureIII), who will inform the police authorities at end of the month.

If 5 or more pieces are detected in a **SINGLE TRASACTION,** then such notes need to be forwarded to local police authorities through nodal bank officer and FIR needs to be filed.

A receipt must be issued to tenderer for impounding the note.

Senior Manager
STC, Rohini

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 34 30-05-2024 12:46:07

बैंक की शाखाओं के नवीन परिसर/शाखा का उद्घाटन

शाखा बोकारो (झारखंड)

शाखा साकची (झारखंड)

शाखा चांदखेड़ा (अहमदाबाद)

WELFARE AND FREEBIES- AN EMERGING CONCEPT

Tanay Verma

In a Reserve Bank of India report in 2022, freebies have been defined as "a public welfare measure that is provided free of charge". It adds that freebies are different from public/merit goods such health and education, expenditure on which has wider and long-term benefits while Welfare refers to assistance programs sponsored by governments for needy individuals and families, including schemes, such as food stamps, health care assistance, and unemployment compensation. These welfare schemes are typically financed through taxation. In a better way the difference between two can be well understood as under:

WELFARE	FREEBIES
Freebies are goods and services given free without any charge to the users.	Welfare schemes, on the other hand, are well thought-after plans that aim to benefit the target population and improve their standard of living and access to resources.
They are generally aimed at benefiting the targeted population in the short term.	They are typically aimed at fulfilling the constitutional obligations (Directive Principles of State Policy) towards citizens.
They are typically aimed at fulfilling the constitutional obligations (Directive Principles of State Policy) towards citizens.	They are typically aimed at fulfilling the constitutional obligations (Directive Principles of State Policy) towards citizens.
Some examples of freebies are free laptops, TVs, bicycles, electricity, water, etc.	Some examples of welfare schemes are public distribution system (PDS), Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA), midday meal scheme, etc.

HOW FREEBIES EFFECT ECONOMY :-

Freebies undercut the basic framework of macroeconomic stability, the politics of freebies distorts expenditure priorities and outlays remain concentrated on subsidies of one kind or the other.

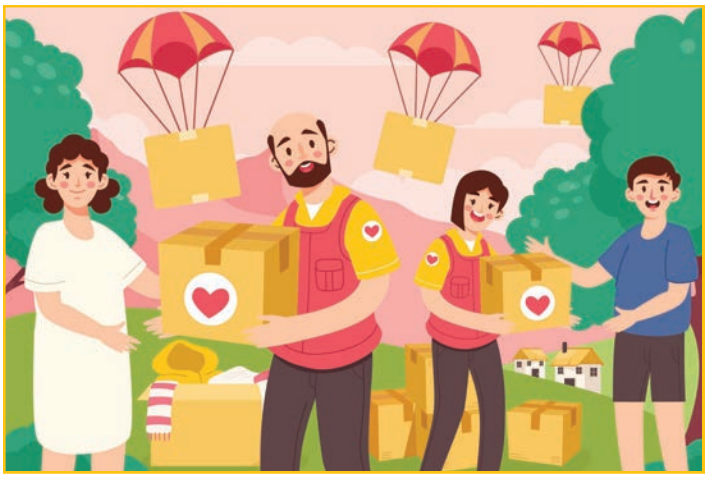

- Offering freebies, ultimately, has an impact on the public exchequer and most of the states of India do not have a robust financial health and often have very limited resources in terms of revenue.
- If states keep spending money for supposed political gains, their finances will go awry and fiscal profligacy would prevail.
- As per the Fiscal Responsibility and Budget Management (FRBM) rules the states can't borrow beyond their limits and any deviation has to be approved by the Centre and central bank.
- Therefore, while states have flexibility on how they choose to spend their money, they cannot in ordinary conditions exceed their deficit ceilings.

REGULARISATION OF FREEBIES :-

- The 'trickle down' yielded some positive results but it also widened inequality, diminished inclusive growth,

and was criticised by economists such as Nobel Laureate Joseph E. Stiglitz. We need to distinguish between the concept of merit goods and public goods.

- It's not about how cheap the freebies are but how expensive they are for the economy, life quality and social cohesion in the long run.
- Most of the centrally sponsored schemes are subjects which are classic subjects in the domain of the states, such as employment, food, education.
- The entry under Article 282 of the Constitution has been used and misused for having all the centrally sponsored schemes.
- The FRBM acts of the Centre as well as States need to be amended to enforce a more complete disclosure of the liabilities on their exchequers.

INSTITUTIONAL CHECKS AGAINST THE FREEBIE CULTURE

- Role of Opposition- The first line of defence has to be the legislature, in particular the Opposition, whose responsibility it is to keep the Government in line.
- CAG audit- In practice, it has lost its teeth since audit reports necessarily come with a lag, by when political interest has typically shifted to other hot button issues.
- Market- It can signal the health of State finances by pricing the loans floated by different State governments differently, reflecting their debt sustainability.

CONCLUSION

Freebies must be understood from an economic perspective and connected to taxpayers' money. Differences between subsidy and freebie are also essential since subsidies are justified and specially targeted benefits meant to meet specific demands. The freebies, on the other hand, are quite different. It can be understood well through this quote - "Give a man a fish and you feed him for a day, teach a man to fish and you feed him for a lifetime."

Senior Manager
BO Kirti Nagar, Delhi

MOU Signed with IIM, Amritsar

Our Bank took a significant stride towards fostering academic, research, and entrepreneurship in Punjab by signing a Memorandum of Understanding (MOU) with the esteemed Indian Institute of Management (IIM) Amritsar. The signing ceremony, graced by the presence of key figures including Prof. R Nagarajan (Director of IIM Amritsar), Sh. Gopal Krishan (General Manager), Sh. Chaman Lal Shienhmar (Field General Manager, Chandigarh) Shri Saminder Singh (Zonal Manager, Amritsar) and Ms. Mahima Gupta (Dean Academics IIM Amritsar).

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 37 30-05-2024 12:46:11

Zonal Office Faridkot Organised Branch Incharges Meeting in the Presence Of General Manager Shri Gopal Krishan.

समय प्रबंधन का महत्त्व

सुमन कुमार

समय प्रबंधन आपके समय का उत्पादक और कुशलतापूर्वक उपयोग करने की एक तकनीक है। समय प्रबंधन कौशल आवश्यक है क्योंकि यह हमें समय का बुद्धिमानी से उपयोग करने और समय बर्बाद करने से रोकने में मदद करता है। यदि आप एक दिन में किए जाने वाले सभी कामों की समीक्षा करने के लिए कुछ समय निकालें, तो आपको एहसास हो सकता है कि आपने कितना समय बर्बाद किया है। अच्छे समय प्रबंधन कौशल के साथ आपके पास तनावग्रस्त हुए बिना वह सब कुछ करने का समय होगा जो आपको चाहिए। आप अपना समय और ऊर्जा उन चीजों पर केंद्रित कर सकते हैं जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। उत्पादकता बढ़ाने के लिए आप कड़ी मेहनत नहीं, बल्कि अधिक समझदारी से काम करेंगे। जब हम अपने समय का उपयोग करने के प्रभारी होते हैं तो हम अधिक केंद्रित और उत्पादक बन जाते हैं। उत्पादकता लाभप्रदता की ओर ले जाती है। उन सभी कार्यों को लिखकर एक सूची बना लें जिन्हें आप प्रतिदिन पूरा करना चाहते हैं। हो सकता है कि आप पूरी सूची देखने में सक्षम न हों, इसलिए सुनिश्चित करें कि आप सबसे जरूरी या महत्वपूर्ण कार्यों को पहले रखें। आपकी कार्य सूची में बड़ी परियोजनाएं डराने वाली लग सकती हैं, लेकिन आप उन्हें कई छोटे कार्यों में बांटकर उन्हें संभालना आसान बना सकते हैं। एक बार जब आपके पास अपनी प्राथमिकता वाले कार्यों की सूची हो, तो एक शेड्यूल लिख लें। आप अनुमान लगा सकते हैं कि प्रत्येक कार्य को पूरा करने में आपको कितना समय लगेगा। यह भी सुनिश्चित करें कि आप पूरे दिन कार्य करने के दौरान कुछ समय के लिए ब्रेक के लिए भी समय निकालें।

अपने समय का प्रबंधन करना सीखते समय, सुनिश्चित करें कि दिन भर के लिए आवश्यक कार्य में जल्दबाजी न करें। गुणवत्ता और असाधारण परिणाम प्राप्त करने पर ध्यान दें। ध्यान भटकाने वाली चीजों से दूर रहें, खासकर जब आप उन कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहे हों जो बड़ी परियोजनाओं का हिस्सा हैं या जब आपके पास पूरा करने के लिए तत्काल समय सीमा हो। ऐसे लोगों के साथ काम न करें जो ध्यान भटका सकते हैं, नहीं तो आप केवल अपना बहुमूल्य समय बर्बाद करते हुए पाएंगे। कुछ कार्यों को पूरा करने के लिए अपने आप को ऐसी गतिविधि करके पुरस्कृत करें जो आम तौर पर ध्यान भटकाने का काम कर सकती है, जैसे ऑनलाइन नवीनतम समाचार पढ़ना या सोशल मीडिया साइटों की जाँच करना। तरकीब यह है कि इन पुरस्कारों को 10 मिनट या उससे भी कम समय तक सीमित रखा जाए। एक बार वह समय समाप्त हो जाए, तो काम पर वापस आ जाएं और अगले कार्यों पर ध्यान केंद्रित रखें। आपको अपना समय अकेले ही प्रबंधित करने की ज़रूरत नहीं है। आप ऑनलाइन विशेषज्ञों से भी समय प्रबंधित करना सीख सकते हैं जो आपको समय का अधिक कुशलता से उपयोग करने के बारे में त्वरित सुझाव और अपडेट प्रदान कर सकते हैं। अधिक समय प्रबंधन तकनीकों और रणनीतियों को सीखने के लिए आप ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी ले सकते हैं।

आइए मुख्य समय प्रबंधन कौशल का विश्लेषण करें और उन्हें कैसे विकसित कर सकते हैं इसपर विस्तार से चर्चा करें।

1. **एक शेड्यूल तैयार करें और उसका सख्ती से पालन करें**: अपने कार्यों और प्रतिबद्धताओं को रेखांकित करते हुए दैनिक या साप्ताहिक एक शेड्यूल तैयार करें और उसका सख्ती से पालन करें। प्रभावी समय प्रबंधन यूं ही हासिल नहीं किया जाता है। इसमें अच्छी मात्रा में योजना शामिल होती है। एक रणनीति विकसित करना महत्वपूर्ण हैं।
2. **अपने लिए सीमाएँ निर्धारित करें**: उन कार्यों या गतिविधियों को ना कहना सीखें जो आपकी प्राथमिकताओं या लक्ष्यों के अनुरूप नहीं हैं। अनावश्यक रुकावटों या विकर्षणों से बचने के लिए दूसरों के साथ स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करें। अत्यधिक

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 39 30-05-2024 12:46:13

सोशल मीडिया ब्राउजिंग या लक्ष्यहीन वेब सर्फिंग जैसी समय बर्बाद करने वाली गतिविधियों को कम करके अपना समय सुरक्षित रखें।

3. **टू–डू सूची के बजाय प्राथमिकता सूची बनाएंः** इस बारे में सोचें कि क्या करने की आवश्यकता है और सबसे महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता दें। किए जाने वाले सभी कार्यों की टू–डू सूची बनाने की बजाय, प्राथमिकता के आधार पर कार्यों की एक सूची बनाएं और जैसे ही आप उन्हें पूरा करें, मदों की जांच करें। इससे उपलब्धि और प्रेरणा की भावना पैदा करने में मदद मिलती है।

4. **सुबह का आरंभ जल्दी शुरू करेंः** दिन का पूरा लाभ उठाने के लिए अपने दिन की शुरुआत जल्दी करें। अधिकांश सफल लोग सुबह जल्दी उठते हैं और काम पर जाने से पहले कुछ त्वरित व्यायाम करते हैं। यदि आप जल्दी शुरुआत करते हैं, तो आपके पास सोचने और दिन की योजना बनाने के लिए बहुत समय होता है। सुबह–सुबह आप अधिक शांत, रचनात्मक और स्पष्ट दिमाग वाले होते हैं। इसका मतलब है कि आपके पास अधिक उत्पादक होने के लिए सभी सामग्रियां हैं।

5. **प्रत्येक कार्य को छोटे–छोटे भागों में बाँट लेंः** आप जो चाहते हैं उस पर ध्यान न दें और छोटे–छोटे लक्ष्य बनाएं जो आपके इच्छित लक्ष्य तक पहुंचें। सभी संबंधित कार्यों को छोट–छोटे समूहों में बाँटें जिन्हें प्रबंधित करना और निपटाना आसान हो। इस प्रकार, आप बेहतर कल्पना कर सकते हैं और अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कदम उठा सकते हैं।

6. **तनाव से समझदारी से निपटेंः** तनाव हमारी उत्पादकता को प्रभावित कर सकता है। हम अक्सर तब तनावग्रस्त महसूस करते हैं जब हम अपनी क्षमता से अधिक काम अपने ऊपर ले लेते हैं। जब तनाव प्रतिक्रिया को प्रबंधित करने की बात आती है तो यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि आपके लिए क्या काम करता है। तनाव से निपटने के प्रभावी तरीके खोजें, जिसमें थोड़ा ब्रेक लेना, व्यायाम करना, ध्यान करना, कोई शौक पूरा करना, किसी दोस्त को फोन करना या संगीत सुनना शामिल है।

7. **मल्टीटास्किंग से बचेंः** मल्टीटास्किंग से ऐसा लगता है जैसे आपको एक साथ अधिक कार्य मिल रहे हों। लेकिन, अध्ययनों से साबित हुआ है कि यह वास्तव में उत्पादकता में बाधा डालता है। इसलिए, एक साथ कई काम करने और कुछ अलग–अलग कार्यों के बीच अपना ध्यान बांटने के बजाय, एक काम पूरा करने और अगले पर जाने पर ध्यान केंद्रित करें। यह छोटा सा बदलाव आपके परिणामों को बेहतर बना सकता है।

8. **एक सिस्टम बनाएं और उसका लगन से पालन करेंः** विभिन्न तकनीकों को आजमाएँ और पता लगाएं कि आपके लिए सबसे उपयुक्त क्या है। एक ऐसा सिस्टम बनाने के लिए चयनित तरीकों को एक साथ रखें जो काम करता हो और आपको बेहतर बनाने में मदद करता हो। इससे अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए सिस्टम का नियमित रूप से पालन करें।

9. **कैलेंडर या डिजिटल नियोजन उपकरण का उपयोग करेंः** कार्य, अवकाश और व्यक्तिगत समय सहित विभिन्न गतिविधियों के लिए कैलेंडर या डिजिटल नियोजन उपकरण का उपयोग करें। अपनी प्रतिबद्धताओं पर कायम रहने के लिए नियमित रूप से अपने कैलेंडर की समीक्षा करें और उसे अपडेट करें।

10 **अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता देंः** अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता देने से आपको उच्च–मूल्य वाली गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है और आप कम महत्वपूर्ण कार्यों से अभिभूत होने से बचते हैं।

11 **अपने अनुभवों से सीखेंः** आप अपना समय कैसे आवंटित करते हैं। इसका मूल्यांकन करने के लिए आत्म–चिंतन में संलग्न रहें और उन क्षेत्रों की पहचान करें, जहां आप सुधार कर सकते हैं। अपने उत्पादकता पैटर्न का आकलन करें और बार–बार समय बर्बाद करने वाली गतिविधियों या आदतों की पहचान करें। अपने दृष्टिकोण को समायोजित करने और अपने समय प्रबंधन कौशल को लगातार निखारने के लिए इस आत्म–प्रतिबिंब का उपयोग करें।

12 **निर्णय लेने का अभ्यास करेंः** हम दिन के 24 घंटों में क्या करते हैं, यही समय प्रबंधन में वास्तविक अंतर पैदा करता है। समय के बारे में अच्छे निर्णय लेने की क्षमता शीर्ष समय प्रबंधन कौशलों में से एक है। प्राथमिकताएं तय करें और तय करें कि किन कार्यों को पहले निपटाना है और किसे न कहना है।

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, गुरदासपुर

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 40 30-05-2024 12:46:14

भारतीय अर्थव्यवस्था: भूत, वर्तमान और भविष्य

अरबिंद कुमार

"सोने की चिड़िया" कहे जाने वाले भारतवर्ष का दुनिया में ज्ञान, नीति, नैतिकता, व्यापार, आर्थिक एवं समृद्धि के मामले में सदैव डंका बजता रहा है। इतने आक्रमण और युद्धों को झेलने के बाद भी भारतीय अर्थव्यवस्था अपने आपको हमेशा गौरव के पल की अनुभूति कराती रही है।

भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास भारत के आर्थिक विकास का आरंभ सिंधु घाटी सभ्यता से माना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था मुख्यतः व्यापार पर आधारित प्रतीत होती है जो यातायात में प्रगति के आधार पर समझी जा सकती है। इतिहासकारों के अनुसार लगभग 600 ई.पू. महाजनपदों में विशेष रूप से चिह्नित सिक्कों को ढ़ालना आरम्भ कर दिया था। इस समय को गहन व्यापारिक गतिविधि एवं नगरीय विकास के रूप में चिह्नित किया जाता है। लगभग 300 ई.पू. से मौर्य काल में भारतीय उपमहाद्वीप का एकीकरण हुआ। राजनैतिक एकीकरण और सैन्य सुरक्षा ने कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ, व्यापार एवं वाणिज्य के माध्यम से सामान्य आर्थिक प्रणाली को समृद्ध किया।

अगले 1500 वर्षों में भारत में राष्ट्रकूट, होयसल और पश्चिमी गंग जैसी प्रतिष्ठित सभ्यताओं का विकास हुआ। इस अवधि के दौरान भारत को प्राचीन एवं 17वीं सदी तक के मध्ययुगीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में आंकलित किया जाता है। इसमें विश्व की कुल सम्पति का एक तिहाई से एक चौथाई भाग मराठा साम्राज्य के पास था, किंतु इसमें यूरोपीय उपनिवेशवाद के दौरान तेजी से गिरावट आयी। आर्थिक इतिहासकार अंगस मैडीसन की पुस्तक द वर्ल्ड इकॉनमी ए मिलेनियल पर्सपेक्टिव (विश्व अर्थव्यवस्था एक हजार वर्ष का परिप्रेक्ष्य) के अनुसार भारत विश्व का सबसे धनी देश और 17वीं सदी तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यस्था था।

सिंधु घाटी सभ्यता सबसे पहली ज्ञात स्थायी और मुख्य रूप से नगरीय आबादी का उदाहरण है। इसका विकास लगभग 3500 ई.पू. से 1800 ई.पू. तक हुआ जो उन्नत और संपन्न आर्थिक प्रणाली की ओर बढ़ा। यहाँ के नागरिकों ने कृषि, पालतू जानवर, तांबे, कांसा एवं टिन से तिक्ष्ण उपकरणों और शस्त्रों का निर्माण तथा अन्य नगरों के साथ इसका विक्रय करना आरम्भ किया। घाटी के बड़े नगरों हड़प्पा, लोथल, मोहनजोदड़ो और राखीगढ़ी में सड़कें, अभिविन्यास, जल निकासी प्रणाली और जलापूर्ति के साक्ष्य, उनकी नगरीय नियोजन के ज्ञान को उद्घाटित करता है।

मौर्यकालीन साम्राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि के साथ–साथ उद्योग धंधो का भी विकास हुआ। इस समय कुछ उद्योगों जैसे की शराब, जहाजरानी, अस्त्र–शस्त्र, नमक, खानों की खुदाई, सिक्का निर्माण, जंगल आदि पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण था जबकि कुछ उद्योग राज्य एवं निजी दोनों का अधिकार था। वस्त्र उद्योग मौर्य काल का प्रमुख उद्योग था। चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु और प्रधानमंत्री चाणक्य के अर्थशास्त्र में मौर्य काल की व्यवस्था का विस्तृत वर्णन मिलता है जोकि कई मामलों में आज भी अद्वितीय है।

गुप्तकालीन साम्राज्य को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। इसे भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार, धार्मिक सहिष्णुता, आर्थिक समृद्धि तथा शासन व्यवस्था की स्थापना काल के रूप में जाना जाता है।

मुगल काल (1526–1858 ई.) के दौरान भारत ने समृद्धि का अभूतपूर्व अनुभव किया। 16वीं शताब्दी में भारत का अनुमानित सकल घरेलू उत्पाद विश्व अर्थव्यवस्था का लगभग 25.1% था। भारत की पूर्व–औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का एक अनुमान है कि

1600 ईस्वी में सम्राट अकबर के खजाने का वार्षिक राजस्व 17.5 मिलियन था (जो दो सौ साल बाद 1800 एडी में ग्रेट ब्रिटेन के पूरे खजाने के सापेक्ष जो कुल 16 मिलियन था)। 1600 ईस्वी में मुगल भारत का अनुमानित सकल घरेलू उत्पाद विश्व अर्थव्यवस्था का लगभग 24.3% था, जो दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा था।

प्राचीन और मध्ययुगीन विशेषताएं यद्यपि प्राचीन भारत में महत्त्वपूर्ण रूप से नगरीय जनसंख्या थी, लेकिन भारत की अधिकतर जनसंख्याँ गाँवों में निवास करती थी जिसकी अर्थव्यवस्था विस्तृत रूप से पृथक और आत्मनिर्भर रही। ग्रामीण आबादी का मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य में संलग्न था तथा कपड़ा, खाद्य प्रसंस्करण तथा शिल्प जैसे हस्थशिल्प उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने के अलावा खाद्य आवश्यकताएँ भी कृषि से पूर्ण होती थी। कृषकों के अलावा अन्य वर्गों के लोग नाई, बढ़ई, चिकित्सक (आयुर्वेद चिकित्सक अथवा वैद्य), सुनार, बुनकर आदि कार्य करते थे।

ब्रिटिश काल में भारत की अर्थव्यवस्था– ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक शक्ति 1757 ई. के बाद से, धीरे–धीरे भारत में विस्तारित हुई। ब्रिटिश शासन के दौरान भारत के विभिन्न प्रांतों में उत्पन्न भारतीय कच्चे माल, मसाले और सामान खरीदने पर भारी राजस्व का लगाया जाता था। जिस कारणवश सराफा की निरंतर आमद जो विदेशी व्यापार के कारण भारत में लाई जाती थी, वे पूर्णतः समाप्त हो गया। औपनिवेशिक सरकार ने युद्ध के लिए भू–राजस्व का इस्तेमाल किया। भारत में आयुध निर्माण करने वाले कारखानों की स्थापना सीधे ब्रिटिश शासन से जुड़ी है। सन 1757 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी ने कोलकाता के फोर्ट विलियम में आयुध बोर्ड स्थापित करने को स्वीकृति दे दी। इसी के साथ भारत में सैन्य आयुध के विकास का औपचारिक युग आरम्भ हुआ और यहीं से भारत में औद्योगिक क्रांति का भी आरम्भ हुआ। 1787 ई. में इच्छापुर में बारूद बनाने का एक कारखाना स्थापित हुआ तथा 1791 ई. में इसमें उत्पादन आरम्भ हो गया। 1801 ई. में कोलकाता के काशीपुर में गन कैरेज एजेन्सी स्थापित की गयी, जिसमें मार्च 1802 में ही उत्पादन शुरू हो गया। जब 1947 में भारत स्वतन्त्र हुआ, उस समय 18 आयुध निर्माण कारखाने थे। बीसवीं शताब्दी के पाँचवे दशक में भारतवर्ष में अग्रेजों की बहुत बड़ी पूँजी लगी हुई थी। 634 विदेशी कंपनियां भारत में इस समय कारोबार कर रही थीं। इनकी वसूली हुई पूंजी लगभग साढ़े सात खरब रुपया थी और 5194 कंपनियां ऐसी थीं जिनकी रजिस्ट्री भारत में हुई थी और जिनकी पूंजी 3 खरब रुपया थी। इनमें से अधिकतर अंग्रेजी कंपनियां थीं। इंग्लैंड से जो विदेशों को जाता था उसका दशमांश प्रतिवर्ष भारत में आता था।

औपनिवेशिक शासन के तहत 80 वर्षों (1780–1860 ई.) की छोटी अवधि में, भारत कच्चे माल का निर्यातक से प्रसंस्कृत वस्तुओं के निर्यातक में बदल गया। विशेष रूप से, 1750 के दशक में, ज्यादातर महीन कपास और रेशम का निर्यात किया जाता था। यूरोप, एशिया और अफ्रीका के बाजारों में भारत 1850 के दशक तक कच्चे माल, जो मुख्यतः कच्चे कपास, अफीम और नील के रूप में शामिल थे, का निर्यात किया करता था। इस तरह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत के उपलब्ध कच्चे माल का दोहन एवं उच्च राजस्व ने भारतीय को निर्मम शोषण तो किया ही साथ ही भारत की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया। ब्रिटिश अर्थशास्त्री एंगस मैडिसन के अनुसार, भारत की विश्व आय का हिस्सा जो 1700 ई. में 27% था (यूरोप के 23% हिस्से की तुलना में) वे 1950 में 3% तक पहुंच गया।

स्वतंत्र भारत की अर्थव्यवस्था– स्वतंत्रता के पश्चात् भारत के तत्कलीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने निर्गुट आन्दोलन को भारत की प्रमुख विदेश नीति के अपनाया। इस दौरान भारत ने सोवियत रूस से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये। सोवियत रूस में समाजवाद स्थापित था। यूँ तो भारत ने समाजवाद को पूरी तरह से नहीं अपनाया किंतु भारत की आर्थिक नीति में समाजवाद के लक्षण साफ–साफ देखे जा सकते थे। इसी समय सरकारी कंपनियों की स्थापना की गयी तथा ज्यादातर उद्योगों को सरकारी नियंत्रण के अधीन रखने के लिए कई तरह के नियम बनाए गए। इस प्रकार की नीति को कई अर्थशास्त्रियों ने लाइसेंस राज और इंस्पेक्टर राज का नाम दिया। भारत के समग्र विकास के उद्देश्य से सन् 1969 और 1980 में बैंको का राष्ट्रीयकरण किया गया जिसके कई उल्लेखनीय परिणाम सामने आए।

सन् 1951 से 1979 तक भारतीय आर्थिक विकास दर 3.1 प्रतिशत तथा प्रति कैपिटा विकास दर 1.0 प्रतिशत थी। विश्व में इसे 'हिन्दू ग्रोथ रेट' के नाम से जाना गया। भारतीय उद्योगों की विकास दर 5.4 एवं कृषि विकास दर 3.0 प्रतिशत थी। किंतु कई कारणों से भारत की आर्थिक विकास की गति बहुत बहुत धीमी थी, जैसेः– कृषि उद्योग में संस्थागत कमियाँ, देश में तकनीकी विकास की कमी, भारत की अर्थव्यवस्था का विश्व के दूसरे विकासशील देशों से एकीकृत न होना, चीन और पाकिस्तान से हुए चार बड़े युद्ध, बांग्लादेशी शरणार्थियों का भारत में प्रवेश, 1965, 1966, 1971 और 1972 में भीषण सूखा पड़ना, देश के वित्तीय संस्थानो का पिछड़ा

हुआ होना, विदेशी पूंजी निवेश पर सरकारी प्रतिबंध, शेयर बाजार में कई छोटे–बड़े घपले होना, भारत की अधिकतर आबादी का साक्षर न होना। इसी अनुक्रम सें भारत में सन 1985 से भुगतान संतुलन (बैलैंस ऑफ पेमेंट) की समस्या शुरू हुई। सन 1991 में चन्द्रशेखर की सरकार के शासन के दौरान भारत मे बैलेंस ऑफ पेमेंट की समस्या ने विकराल रूप धारण किया।

1990 के बाद नरसिंह राव के नेतृत्व में भारत सरकार ने देश में बड़े स्तर पर आर्थिक सुधारों का निर्णय लिया। जिसमें उदारीकरण सबसे महत्वपूर्ण था जिसके जनक डॉ. मनमोहन सिंह थे। उन्होंने भविष्य के भारत की अर्थनीति को पूर्णतः बदलने की शुरुआत कर दी थी। उनके किये हुए आर्थिक सुधार उदारीकरण (लिब्रलाइज़ेशन), वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन), निजीकरण (प्राइवेटाइजेशन) थे जिसे 1996 से 1998 तक पी चिदम्बरम जोकि भारत के तत्कालिक वित्त मंत्री थे, आगे बढाया। 1998 से 2004 तक देश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने और भी ज्यादा उदारीकरण और निजीकरण किया। इसके बाद 2004 मे आधुनिक भारत की अर्थनीति के रचयिता मनमोहन सिंह भारत के प्रधानमंत्री बने और पी चिदम्बरम वित्त मंत्री। 2014 में भाजपा सरकार ने भी इसी दिशा में अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाया। 1 जुलाई 2017 से जीएसटी लागू होने से संपूर्ण भारत एकसमान बाजार में परिवर्तित हो गया।

भारतीय अर्थव्यवस्था: आज भारत की अर्थव्यवस्था के लिए वर्ष 2023 आर्थिक दृष्टिकोण से बेहतरीन रहा। इस वर्ष भारत की जीडीपी 3.73 ट्रिलियन डॉलर पहुंच गई तथा प्रति व्यक्ति जीडीपी 2601 डॉलर हो गई। इस साल भारत की अनुमानित विकास दर 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है, जबकि दुनिया की औसत विकास दर केवल 2.9 फीसद थी। भारतीय अर्थव्यवस्था में सकल घरेलू उत्पाद में 6.9% की दर से वृद्धि दर्ज करने का अनुमान है, इसके अलावा मुद्रास्फीति में कमी देखी जा रही है। वर्ष 2023–24 की दूसरी और तीसरी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद की विकास दर 7.6% रही है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ बढ़ती जनसंख्या की समस्या– पिछले वर्ष हम जनसंख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़कर पहले नम्बर पर आ गए। जो एक उपलब्धि नहीं बल्कि देश के विकास में एकप्रकार की बाधा है। हमारे प्रयासों का एक बड़ा हिस्सा तो यही समस्या विफल कर देती है। हालांकि शिक्षा के प्रभाव से जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आई है फिर भी यह सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है। जनसंख्या वृद्धि के कारण भारत के संसाधनों पर अतिरिक्त प्रभार बढ़ता है।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की रिपोर्ट के अनुसार केंद्र और राज्यों को मिलाकर भारत का सामान्य सरकारी ऋण मध्यम अवधि में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 100 फीसदी से ऊपर पहुंच सकता है तथा इस संबंध ने हमें सचेत किया है कि इसके कारण लंबी अवधि में कर्ज चुकाने में दिक्कत हो सकती है क्योंकि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लक्ष्य हासिल करने में देश को बहुत निवेश करना होगा। किंतु भारत सरकार का मानना है कि सरकारी ऋण में जोखिम काफी कम है क्योंकि ज्यादातर कर्ज भारतीय मुद्रा यानी रुपये में ही है लेकिन फिर भी यह एक चिंता का विषय है।

यूक्रेन युद्ध के जारी रहने से भारत के सबसे बड़े निर्यात बाजार यूरोपीय संघ में ऊर्जा से जुड़ी मंदी का खतरा है। इज़राइल और हमास के युद्ध का बढ़ता दायरा इस चिंता को और भी बढ़ाता है। यह देखते हुए कि ठोस निर्यात वृद्धि के बिना एक दशक तक विश्व के किसी भी देश में 7% से अधिक की वृद्धि नहीं देखी गई है, संरक्षणवादी प्रवृत्ति का विस्तार उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिये प्रमुख बाधा है।

भारत में विनिर्माण उद्योग में स्थिरता संबंधी समस्या है। सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि का असर आम आदम की आय के ऊपर परिलक्षित नहीं होता दिख रहा है । इसके अतिरिक्त बेरोजगारी का लगातार उच्च स्तर पर बने रहने की समस्या तथा लंबे समय से जारी महंगाई का उच्च स्तर चिंता का विषय है।

सकारात्मक पहलू: भारतीय अर्थव्यवस्था में निकट भविष्य में स्थानीय कारकों की बदौलत तेजी से वृद्धि होने की उम्मीद है, जिनमें से कुछ उच्च आवृत्ति संकेतकों के रूप में परिलक्षित होते हैं। कॉरपोरेट ऋण जीडीपी अनुपात लगभग 15 वर्षों में अपने सबसे निचले बिंदु पर है, इसमें विगत पाँच वर्षों में काफी कमी आई है और बैंक बहियों से ज्यादातर पुराने खराब ऋणों को हटा दिया गया है। ऋण जीडीपी अनुपात जितना कम होगा, देश द्वारा अपने ऋण का भुगतान करने और डिफॉल्ट के अपने जोखिम को कम करने की उतनी ही अधिक संभावना होगी, जिससे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में वित्तीय स्थिरता हो सकती है। इनपुट लागत के दबाव में कमी, कॉर्पोरेट बिक्री में वृद्धि और अचल परिसंपत्तियों में निवेश में वृद्धि केपेक्स चक्र में तेजी की शुरुआत है, जो संभावित रूप से भारत के विकास को गति देने में योगदान दे सकती है। विगत अठारह महीनों से बैंक ऋण दो अंकों में बढ़ रहा

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 43 30-05-2024 12:46:15

है, जो आंशिक रूप से निवेश संबंधी जोखिम में वृद्धि को दर्शाता है। अक्टूबर 2023 में भारत के औद्योगिक उत्पादन की विकास दर 16 महीने के उच्च स्तर 11.7% तक बढ़ी है।

समग्र सकल घरेलू उत्पाद विकास में कृषि की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, रबी की अच्छी उत्पादकता को देखते हुए उच्च समर्थन मूल्य के साथ गेहूँ उत्पादन, पर्याप्त जलाशय स्तर और सहायक जलवायु कारकों के साथ कृषि क्षेत्र में अच्छी संभावनाएँ दिख रही हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्थाः कल (भारत के भविष्य की संभावनाएं) वर्तमान में देखें तो भारतीय अर्थव्यवस्था आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। यह तय है कि बढ़ती आय और बचत का स्तर, निवेश के अवसर, विशाल घरेलू खपत और सबसे अधिक युवा आबादी आने वाले दशकों में विकास को सुनिश्चित करेगी। भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 70% घरेलू खपत से प्रेरित है, भारत दुनिया का छठा सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार बना हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था की बात करें तो, भारतीय उत्पादों और सेवाओं के लिए इसके इंजन सूचना प्रौद्योगिकी जैसे – दूरसंचार, आईटीईएस, फार्मास्यूटिकल्स, बैंकिंग, मशीन टूल्स, बीमा, लाइट इंजीनियरिंग माल, स्टील, ऑटो घटक, कपड़ा और परिधान, रत्न और आभूषण ऐसे क्षेत्र हैं जो मांग पैदा करने पर विश्व में तीव्र गति से बढ़ने की संभावना रखते हैं। वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था पीपीपी (क्रय शक्ति समता) पर 4.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है। आने वाले समय में विश्व उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी आज के 5% से बढ़कर 2040 तक 20.8% हो जाने का अनुमान है। 2027–2028 तक भारतीय अर्थव्यवस्था के विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने की उम्मीद है। भारत ईज ऑफ डूइंग बिजनेस इंडेक्स में 63वें और ग्लोबल कॉम्पिटिटिवनेस इंडेक्स में 40वें स्थान पर है, जिसे सुधारे जाने की जरूरत है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख अंग रही है और आज भी विश्व कि प्रमुख 5 आर्थिक शक्तियों में शामिल है और तेजी से विकसित अर्थव्यवस्था बनने कि ओर अग्रसर है। हालांकि जनसंख्या विस्फोट जैसी समस्याओ को पार करना आसान नहीं है, फिर भी आज दुनिया को पूरी आशा है कि आने वाले वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया में अपना परचम लहराएगी।

अधिकारी
प्रधान कार्यालय आरटीटीएस कक्ष

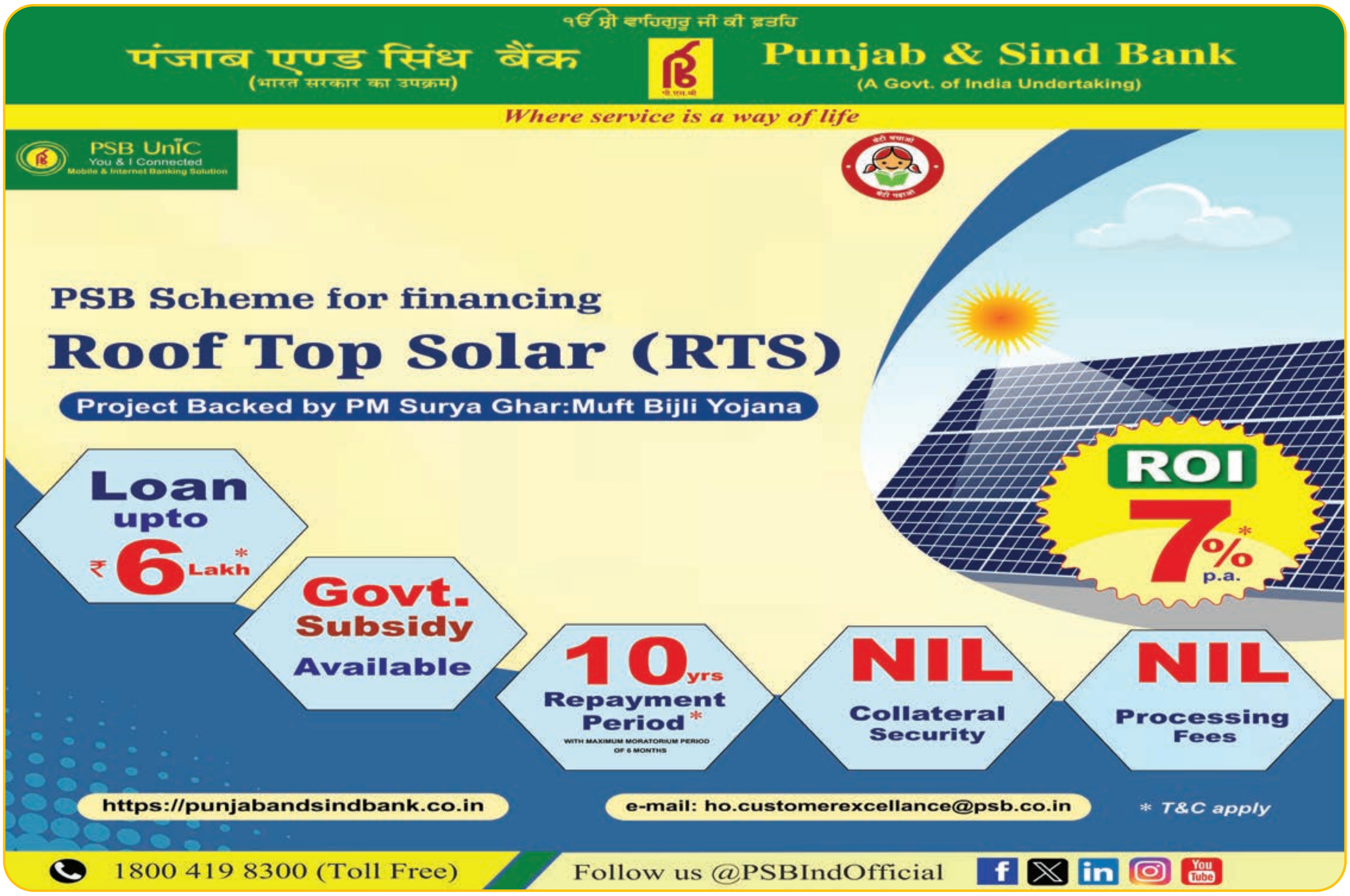

Our Bank has signed an MoU with Warehousing Development and Regulatory Authority (WDRA) for financing against electronic Negotiable Warehouse Receipt (e-NWR). The MoU was signed in the presence of Shri Swarup Kumar Saha (MD & CEO) and Shri T K Manoj Kumar (Chairman) WDRA.

Our Bank has Launched its -one-of-a kind MSME Training Programme PSB IGNITE with Knowledge Partner POORNATHA.

੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

Where service is a way of life

PSB UnIC
You & I Connected

"BIG REWARDS . BIGGER SAVINGS"

PSB UDYAM
CURRENT ACCOUNT

PLATINUM | GOLD | SILVER

FEATURES

- FREE CHEQUE BOOK/ DD/NEFT/RTGS FACILITY
- FLEXI FACILITY (AUTO SWEEP-IN & SWEEP-OUT)
- FREE INSTALLATION CHARGE OF BHARAT/ UPI QR CODE
- PoS RENT WAIVED*
- FREE LOCKER RENT FACILITY*
- FREE PREMIUM DEBIT CARD WITH ATTRACTIVE FEATURES
- ATTRACTIVE OFFER IN SERVICE CHARGES

*T&C Apply

PSB GST Ease Loan
(A MSME Loan Product)

- ROI 8.80%*
- Maximum Loan ₹5 Cr
- Collateral Security Minimum 50%
- Concession on Processing Charge 50%*

*T&C Apply

Higher Return on your savings with our Fixed Deposit Product

PSB Dhan Laxmi
444 Days

- ROI 7.25% p.a.
- Senior Citizen 0.50% p.a. Extra
- Super Sr.Citizen 0.65% p.a. Extra
- Loan/ OD facility Available

*T&C Apply

Scan QR code to download PSB UnIC

For Further Details, Please Contact Our Nearest Branch.
Visit us at: https://punjabandsindbank.co.in

Scan QR code to download PSB UnIC

1800 419 8300 (Toll Free)   Follow us @PSBIndOfficial

Printed & Designed at Infinity Advertising Services Private Limited, Faridabad

Punjab & Sindh Bank Inner Pages new.indd 46   30-05-2024 12:46:22